वर्ष 23 । अंक 6 । जनवरी, 2022

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

यह प्रतिमा 1985 में ब्रुसेल्स के मोलेनबीक इलाके में बनाई गई थी। इसमें दिखाया गया दृश्य एक हास्यकथा की याद दिलाता है जिसमें एक आदमी अप्रत्याशित रूप से एक मैनहोल से निकलता है और एक पुलिसकर्मी के नीचे से पैर खींचता है। इसे बनाने वाले कलाकार थे बेल्जियम के मूर्तिकार टॉम फ्रैंटजेन।

नेल्सन मंडेला की यह तस्वीर लोहे के 50 खम्भों से बनाई गई है, जो उनकी गिरफ्तारी और राजनीतिक कष्टों से भरे 50 वर्षों की याद दिलाती है। तस्वीर का सही रूप तभी देखा जा सकता है जब आप खम्भों को एक निश्चित कोण से देखें, अन्यथा वे केवल डंडों का एक झुरमुट प्रतीत होता है।

'अननोन ब्यूरोक्रेट' नामक यह प्रतिमा 1994 में आइसलैंड के मूर्तिकार मैग्नस टॉमसन द्वारा बनाई गई थी। आइसलैंड के रेयक्जाविक शहर में बनी सरकारी कार्यालय में काम करने वाले एक अधिकारी को दर्शाती यह मूर्ति दुनिया की शायद अकेली ऐसी मूर्ति है। इसमें आदमी के चेहरे की जगह बड़ी सी चट्टान दिखाई गई है।

यह दुनिया में मूर्तिकला का अद्भुत नमूना है। कांसे की ये मूर्तियाँ असली घोड़ों से डेढ़ गुना बड़ी हैं, हालाँकि तस्वीरों में अकसर ऐसा लगता है कि ये छोटी हैं। उनके पैरों में विशेष फव्वारे बनाए गए हैं जो पानी को इस तरह से बाहर निकालते हैं जिससे यह आभास होता है कि वे पानी के बीच सरपट दौड़ रहे हैं।

कहाँ क्या?

अंक विशेष

स्वामी विवेकानन्द	: संदीप पांडे	—	11
गौरी निम्बालकर	: शिखर चन्द जैन	—	14
सत्यकथा : संकल्प से....	: सीताराम गुप्ता	—	22
नव वर्ष के संकल्प	:	—	26
घड़ी का क्रमिक विकास	: गोवर्द्धन यादव	—	28
शुतुरमुर्ग	: किरण बाला	—	37
पोलो	: अनिल जायसवाल	—	38

कहानी

मददगार नन्हा दोस्त	: रजनीकान्त शुक्ल	—	07
कंजूसी का राज	: सावित्री चौधरी	—	09
रंजन ने माफी माँगी	: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'	—	15
बोतल का जिन्न	: उमेश कुमार चौरसिया	—	19
नाटक में शर्म कैसी	: अंकुश्री	—	23
राजा को सबक	: डॉ. रामसिंह यादव	—	31
बिट्टू बदल गया	: राजा चौरसिया	—	35
मुझे सफाई नहीं पसन्द है	: अलका प्रमोद	—	39

कविता-गीत

आम और नीम	: सतीश मिश्र	—	06
प्यारी पतंग	: सुभाष जैन	—	10
मेरा बाजा	: राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'	—	10
ध्वज तिरंगा प्यारा	: गौरीशंकर वैश्य विनम्र	—	18
मैं वीर सिपाही	: गोविन्द भारद्वाज	—	18
चलें बाग में	: रमेशचंद्र पंत	—	30
खरा उतरना है	: राजेन्द्र निशेष	—	34
नए साल का जादू	: महेन्द्र कुमार वर्मा	—	34
नए वर्ष में	: डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'	—	34

विविधा

बूझो तो जानें : पारस चन्द जैन	—	13
वर्ग पहेली : सुधा जौहरी	—	17
चित्र पहेली : चाँद मोहम्मद घोसी	—	21
दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़	—	25
प्रेरक प्रसंग : मोहन उपाध्याय	—	32
My Nani : अदिति चौखड़ा	—	46

स्तम्भ

क्या आप जानते हो ? – 2, सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 21, दस सवाल : दस जवाब– 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, व्हाट्सएप कहानी– 33, सुडोकू–36, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला – 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, चित्र कथा–47, किड्स कॉर्नर, जन्मदिन की बधाई – 50

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष – 23 अंक –6 जनवरी, 2022

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452

सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651

प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन

कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री

ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा

चित्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	: 30 रु.
वार्षिक	: 300 रु.
त्रैवार्षिक	: 800 रु.
पंचवार्षिक	: 1200 रु.
दस वर्ष	: 2400 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7000 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर (राज.) से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने हेतु -

ANUVRAT VISHWA BHARTI
STATE BANK OF INDIA ADB BRANCH Rajsamand
A/c No. : 51040202830 IFS Code : SBIN 0031308

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

विश्वास की मम्मी रसोई में काम समेट रही थी, तभी उनके मोबाइल फोन की घंटी बोल उठी। वे रसोई से ही बोली– ''अरे विशु, देखना किसका फोन है?'' फोन की रिंगटोन कुछ अलग ही थी इसलिए वे समझी किसी और का फोन बोल रहा है। विशु ने 'ठीक है' कहा और घंटी बन्दकर वह अपने कमरे में चला गया।

कुछ देर बाद मम्मी कमरे में आई तो देखा विशु एक डायरी में कुछ लिख रहा था। मम्मी ने पूछा– ''बेटा, किसका फोन था? तीन–चार दिन से यह नई रिंगटोन सुनाई देती है। किसने लगाई है यह रिंगटोन? पापा ने या आस्था ने?''

''अरे मम्मी! यह तो आपके फोन से ही घंटी है। और यह रिंगटोन नहीं है, अलार्म है। मैंने ही लगाई है, रोज रात को 9 बजे बोलती है।'' विशु की बातें मम्मी की समझ से बाहर थी– रात 9 बजे... अलार्म... आखिर क्यों? अलार्म तो सुबह जल्दी उठने के लिए लगाते हैं। तभी विशु के पापा ने कमरे में प्रवेश किया। विशु के हाथ में डायरी देखकर बोले– ''अरे विशु, यह तो वही डायरी है जो मैंने तुम्हें लाकर दी थी, नए साल के पहले दिन।''

''हाँ, पापा! मैं रोज इसमें दो बातें लिखता हूँ।'' ''जरा मैं भी तो देखूँ, क्या लिखते हो?'' विशु के पापा डायरी के पन्ने पलटने लगे। आज के पन्ने पर लिखा था– ''आज मैंने दादाजी को बिना माँगे ही पानी का गिलास भर कर दिया। मुझे बहुत अच्छा लगा। दादाजी ने मेरे सिर पर हाथ फेरा।'' और यह भी– ''आज स्कूल में होमवर्क नहीं करने पर मैंने झूठा बहाना बनाया। बाद में यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगा।'' विशु के मम्मी–पापा प्यार से अपने बेटे की ओर देख रहे थे। उनकी आँखें स्नेह से नम हो रही थी। मम्मी ने विशु को बाँहों में भरते हुए पूछा– ''और यह 9 बजे के अलार्म का क्या चक्कर है? जरा यह भी तो बता दो।''

''अरे मम्मी, जैसे ही 9 बजे अलार्म बोलता है, मैं डायरी निकालता हूँ और दिन की एक अच्छी बात याद करके लिखता हूँ और एक गलती भी जो मुझ से हुई हो। अलार्म तो बस याद दिलाने के लिए है।''

मम्मी की ओर देखते हुए पापा बोले– ''देखो संध्या, डायरी लिखने की आदत मैं इतने सालों से नहीं डाल सका। विशु ने कितनी आसानी से शुरू कर दिया। मुझे पूरा भरोसा है कि ये एक आदत विशु के जीवन को सफलताओं से भर देगी।''

इस बीच आस्था भी कमरे में आ चुकी थी। चारों ने एक दूसरे को बाँहों में भर कर घेरा बना लिया और गाने पर थिरकने लगे।

बच्चो! छोटी–छोटी आदतें भी हमारे जीवन में बड़ा परिवर्तन ला सकती हैं। बस, पक्का इरादा करने की जरूरत है।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका ही,

संचय

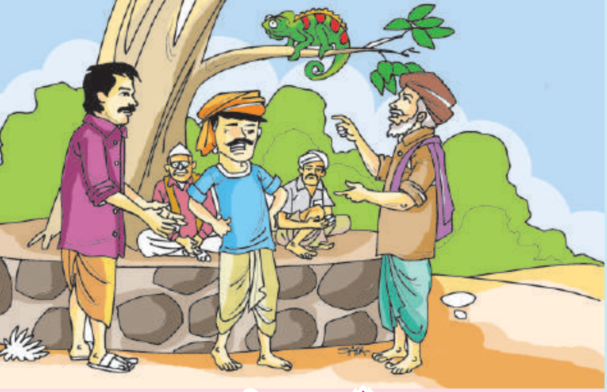

महाप्रज्ञ की कथाएँ

तुम दोनों सही हो

कुछ पथिक आम की शीतल छाँव के नीचे आकर बैठे। चर्चा चल पड़ी। एक बोला– ''अभी मैं इस रास्ते से गुजरा हूँ। मैंने देखा, एक वृक्ष पर एक जानवर बैठा है। वह लाल रंग का है।'' तत्काल दूसरा बोल उठा– ''तुम्हें भ्रम हो गया। मैंनें भी उसको देखा है। वह हरे रंग का था।'' वह बोला– ''तुम गलत कहते हो। कोई दूसरे पेड़ पर जानवर देखा होगा। मैंने अपनी आँखों से देखा है कि वह लाल रंग का था।''

उसने कहा– 'मैं गलत नहीं कह रहा हूँ। तुम गलत कह रहे हो। वह जानवर हरे रंग का ही था।'' आरोप प्रत्यारोप चलता रहा। कुछ समय बिता, दोनों ने बाँहे चढ़ा दी। लड़ाई प्रारम्भ हो गई।

एक समझदार पथिक ने कहा– ''बेकार क्यों लड़ रहे हो? मैं भी तुम्हारे पीछे–पीछे उसी रास्ते से आ रहा हूँ। तुम दोनों सही हो। वह लाल रंग का भी था और हरे रंग का भी। तुम सम्पूर्ण दृष्टि से सोचोगे तो दोनों सही निकलोगे और स्वार्थ की दृष्टि से सोचोगे तो लड़ते ही रहोगे। देखो, वह जानवर गिरगिट था। जब पहला पथिक उधर से निकला तब उसका रंग लाल था। जब दूसरा पथिक उधर से निकला तब वह हरे रंग में बदल गया। गिरगिट रंग बदलता है इसलिए तुम दोनों सही हो।''

कथा बोध – अपनी बात पर अड़े रहना उचित नहीं है। विवेक के साथ चिन्तन करने पर सही समाधान मिल जाता है।

पद्य कथा

आम और नीम

एक बाग में आम, नीम के,
पेड़ों में छिड़ गई लड़ाई।
दोनों खूब बुराई करते,
लेकिन अपनी करें बड़ाई।
बोला आम नीम से मेरे,
स्वाद फलों का लाजवाब है।
जो मेरे फल चख लेता है,
बन जाता मानों नवाब है।

तभी नीम बोला, मीठे में-
कीड़े भी तो पड़ जाते हैं।
यह ही नहीं तुम्हारे फल तो,
कितनी जल्दी सड़ जाते हैं।
और हमारे फल कम मीठे,
चिड़ियों का भोजन बनते हैं।
पत्ती, छाल और बीजों से,
हम रोगों को हर लेते हैं।

इन्हें झगड़ते देख, प्यार से-
बरगद बाबा ने समझाया।
एक दूसरे की कमियों को,
खोज-खोज कर क्या है पाया ?
ऐसा करो आज से दोनों,
दोनों की ढूँढ़ो अच्छाई।
उनको गिना-गिना कर चाहें,
कितनी भी फिर करो लड़ाई।

एक दूसरे की अच्छाई
खुद के जीवन में अपनाओ।
अपनी खुशियाँ बाँटो सब में,
औरों की खुशियाँ घर लाओ।
फिर देखो तुम अनायास ही,
कद दोनों का बढ़ जाएगा।
कोई झगड़ा नहीं बचेगा,
दुःख आपस में बँट जायेगा।

सतीश मिश्र
बजरिया शाहजहाँपुर (उत्तरप्रदेश)

मददगार नन्हा दोस्त

हरियाणा राज्य के यमुनानगर जिले में पन्द्रह साल का ईशान शर्मा अपने स्कूल की छुट्टी होने के बाद घर लौट रहा था। वह नवीं कक्षा का छात्र था। स्कूल से आते–आते उसे लगभग ढाई तीन बज गए थे। जब वह अपने घर के करीब पहुँचने ही वाला था कि उसे एक अजीब सा दृश्य दिखाई दिया। उसने देखा कि दो मोटरसाइकिल सवार एक विदेशी महिला के साथ गर्मागरम बहस कर रहे हैं। ईशान ने आगे बढ़ते हुए इस विवाद में हस्तक्षेप करने की कोशिश करते हुए आवाज लगाई– ''ऐ क्या कर रहे हो?''

जब तक ईशान उनके करीब तक पहुँच पाता वे अपना काम पूरा कर चुके थे। महिला के पर्स को छीनकर उन्होंने अपनी बाइक का मुँह जिधर को था उधर को ही भगा दिया। ईशान ने बड़ी फुर्ती दिखाते हुए दौड़ लगाई और बाइक का पीछा किया।

मगर पैदल और बाइक का क्या मुकाबला होता ? अगले चौराहे तक पहुँच कर ईशान के कदम रुक गए। उसे समझ नहीं आया कि वे बदमाश आगे किस दिशा में गए हैं। वह निराश कदमों से वापस आया। वह महिला अभी वहीं पर थी। ईशान को आया देखकर वह आगे बढ़ी। अनजान देश में अचानक लुटे जाने पर वह परेशान थी। ईशान ने उससे बात करने की कोशिश की तो पाया कि उस महिला को हिन्दी या अँग्रेजी कोई भी भाषा नहीं आती है।

ईशान ने कुछ सोचा और फिर उनका ट्रैवल बैग उठाया और अपने साथ घर आने का इशारा किया। उसका घर बिलकुल नजदीक था। उस समय उसके घर पर कोई नहीं था। पापा ऑफिस गए थे। मम्मी टीचर थी तो वे भी स्कूल में ही थी और बहन भी अभी स्कूल से घर नहीं लौटी थी। उसने अतिथि महिला को आराम से बैठाया, पानी पिलाया और फिर घर पर रखे मोबाइल से गूगल ट्रान्सलेशन के जरिए अपने सवाल और उनके जवाब अँग्रेजी में अनुवाद कर घटना को पूरी तरह समझा।

ईशान को पता चला कि छीने गए पर्स में महिला का मोबाइल, भारतीय करेंसी में दस लाख रुपए और कुछ जेवरात रखे थे। जिन्हें वे लोग ले गए थे। बिना मोबाइल व पैसों के वह अपरिचित देश में असहाय थी। ईशान ने महिला के सामान से कोई हल ढूँढने की कोशिश की तो मालूम हुआ कि उनके सामान में रखे एक कागज में होटल के किसी कस्टमर का फोन नंबर लिखा था।

ईशान ने तुरन्त अपने फोन से वह नंबर मिलाकर महिला को पकड़ा दिया। मगर इससे बात बनी नहीं। उसकी हिन्दी बातों के जवाब में महिला अपनी भाषा में जोर–जोर से बोले जा रही थी। उसके हाव भाव को देखकर ईशान को लगा कि बहुत गुस्सा कर रही थीं। बात खतम होने से पहले ईशान ने फोन अपने हाथ में ले लिया। अब ईशान ने उसे धमकाते हुए कहा कि– ''इनका सामान जहाँ से ले गए हो, वहीं आकर वापस कर जाओ वरना हम पुलिस को सूचित करने जा रहे हैं।'' इसके जवाब में उधर से फोन काट दिया गया।

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

आसनों से शरीर का संतुलित विकास होता है। मांसपेशियाँ लचीली और शक्तिशाली बनती हैं। भीतर के अवयव अच्छी तरह कार्य करते हैं। आलस्य दूर होता है और पढ़ने में मन अधिक लगता है।

भुजंगासन

भुजंग का अर्थ साँप होता है जिस प्रकार वह फण को ऊँचा कर मुँह से फुफकार करता है उसी तरह मस्तक और गर्दन को ऊपर उठाकर, जीभ से निचले दाँतों का छूकर, मुँह से फुफकार की आवाज करें।

स्थिति –

1. सीने ओर पेट के बल लेटे। नाक व ललाट जमीन पर लगा रहे।
2. पैर के दोनों अँगूठे जमीन को छूते हुए सटे रहेंगे।
3. दोनों हाथों की हथेलियों को जमीन पर रखें। हथेलियाँ सीने से एक फीट दूरी पर स्थापित करें। हाथ की अँगुलियाँ खुली रखें।

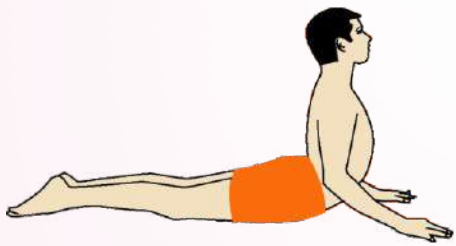

विधि–

1. पूरा श्वास भरते हुए मुख और गर्दन को ऊपर उठाएँ। उसी स्थिति में फुफकार करते हुए मुँह से श्वास को छोड़े।
3. पूरा श्वास भरते हुए सीने को ऊपर उठाएँ व दोनों हाथों को सीधा करें। मस्तक ओर गर्दन को पीछे मोड़ते हुए ऊपर देखें। रीढ़ की हड्डी धनुषाकार में आ जायेगी।
4. श्वास को मुँह से छोड़ते हुए फुफकार करें वह सीना गर्दन ओर ललाट को जमीन से लगाएँ।

विश्राम – शरीर को शिथिल व स्थिर मुद्रा में लाएँ, कायोत्सर्ग करें। इस विधि को तीन बार दोहराएँ।

लाभ– इस आसन को नियमित करने से सीना मजबूत होता है। कब्ज मिटती है। भूख अच्छी लगती है। उदर विकारों का शमन होता है। यकृत और गुर्दे स्वस्थ रहते हैं। रीढ़ की हड्डी और सुषुम्ना नाड़ी शक्तिशाली और लचीली बनती है।

मत्स्यासन

इस आसन से मछली का आकार बनता है, इसलिए इसको मत्स्यासन कहा जाता है।

स्थिति–

1. यह आसन लेटकर किए जाने वाले आसनों में है। पैरों को सीधा फैलाएँ। रीढ़ की हड्डी और गर्दन को सीधी रखें। पद्मासन लगाएँ।
2. हथेलियाँ सीधी जमीन पर टिकी रहें। पीछे भूमि पर कुहनियों के सहारे लेट जाएँ।
3. श्वास भरकर, हाथों को कंधों के पास रख, गर्दन को सीधा करें।
4. श्वास छोड़ते हुए, दोनों पैरों को सीधा करें कायोत्सर्ग की स्थिति में आएँ।

समय और श्वास– इसे तीन बार करें। लम्बे समय तक करें, तो श्वास–प्रश्वास सामान्य रखें।

लाभ– मत्स्यासन से गर्दन, सीना, हाथ, पैर व नस–नाड़ियों के दोष दूर होते हैं। आँख, कान, गले की बीमारियाँ दूर होती हैं। सिर दर्द से मुक्ति मिलती है। खून का संचालन ठीक होता है। आलस्य दूर होता है। मन की एकाग्रता बढ़ती है। यह आसन कमर दर्द, स्नायु दुर्बलता, गर्दन का दर्द, सिर दर्द आदि रोगों से मुक्ति दिलाने में सहायक है।

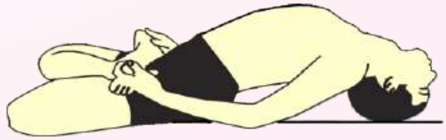

कंजूसी का राज

नन्दू का प्रिय मित्र था– शम्भू। वह रईस पिता का बेटा था और उसे हाथ खर्च के मुँह–माँगे रुपए मिल जाते थे। जबकि नन्दू की माँ तंगहाली के कारण तीन–चार घरों में सफाई और बरतन माँजने का काम करती थी, जिससे मिलने वाली थोड़ी–सी तनख्वाह से उनका घर खर्च चलता था। ऐसे में नन्दू को हाथ खर्च के लिए थोड़े से रुपए ही मिलते थे।

वह जब–तब अपनी माँ से शिकायत करने लगता– ''माँ, मुझे भी दूसरे लड़कों की तरह कीमती खिलौने चाहिए। मुझे हाथ खर्च के ज्यादा रुपए क्यों नहीं देती ?'' ''बेटा! मैं तुम्हें अगले महीने की तनख्वाह से काफी रुपए दूँगी।'' पर ऐसा दिन कभी नहीं आता, जब नन्दू को चाहे जितने रुपए मिलते।

माँ की कंजूसी देखकर वह अपनी माँ से सीधे मुँह बात ही नहीं करता। एक दिन पार्क में वह उदास बैठा था। शम्भू के पूछने पर उसने उसे सारी बात बता दी। शम्भू ने कहा– ''मेरी बात मानो। यदि तुम्हें ज्यादा रुपए चाहिए, तो एक दिन हमारे घर चलो। हमारी कामवाली इतवार की छुट्टी करती है। उसके बदले तुम काम कर देना और बदले में तुम्हें 50 रुपये मिलेंगे।''

उसकी बात सुनकर नन्दू खुश हो गया। दूसरे दिन रविवार था। इस कारण वह शम्भू के साथ उनके घर चला गया। शम्भू की माँ ने नन्दू को घर की सफाई करने और बरतन माँजने के लिए कहा। उसने खुशी से झाड़ू उठाई और सफाई करने लगा। पौछा लगाने के बाद वह तो बहुत ही थक गया। पर शम्भू से किए वादे के कारण वह काम मैं जुटा रहा।

उसने अपने घर में तो कभी एक चम्मच भी नहीं माँजी थी न ही कभी सफाई की थी। इस कारण धीरे–धीरे सारा काम निपटाने में ही उसने दो घंटे लगा दिए।

शम्भू की माँ ने उसे 50 रुपए काम करने के थमा दिए। उसने जेब में रुपए रखते हुए शम्भू से कहा– ''मित्र, मुझे तो आज पता चला कि रुपए कमाना बहुत ही परिश्रम का काम है।''

तभी शम्भू ने बताया– ''अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि छुट्टी करने वाली कौन सी कामवाली है? वह कामवाली है– तुम्हारी माँ। बेचारी कितनी कंजूसी से घर का खर्चा चलाती है, तुम्हें पढ़ाती है। फिर भी तुम उससे नाराज रहते हो। सोचो, कितना परिश्रम करना पड़ता है– तुम्हारी माँ को।''

यह सुनते ही नन्दू की आँखों से आँसू उमड़ आए। आज वह रुपए की कीमत और माँ की कंजूसी का राज जान चुका था।

दूसरे दिन मातृ–दिवस था। नन्दू अपनी मेहनत की कमाई के 50 रुपए लेकर बाजार गया और माँ के लिए नई चप्पल खरीद लाया। क्योंकि उसकी माँ तो नंगे पाँव घरों में काम करने जाती थी। नन्दू की माँ ने उपहार में मिली नई चप्पलों का पैकेट बहुत ही खुश होते हुए थाम लिया। फिर बेटे को अपने सीने से लगाकर आशीर्वाद देने लगी।

सावित्री चौधरी
जयपुर (राजस्थान)

प्यारी पतंग

बाँध पाँवों में लम्बी डोर
नाचे ज्यों सावन में मोर।
बच्चों को लगती है प्यारी
ज्यों चन्दा को चाहे चकोर।।

स्पर्श करने को नभ छोर
चली हवा की दिशा की ओर।
रंग बिरंगी प्यारी पतंग
करती बच्चों को हर्ष विभोर।।

खाती गोते करती परेशान
मन में उठती तब एक हिलोर।
फिर से छूने लगती आसमां
चलता बार–बार यही दौर।।

कटती है पतंग किसी की
बच्चे मचाते खूब शोर।
लूटने को रहते उत्साहित
पल पल करते रहते गौर।।

देती सीख पतंगें हमको
छू लो भले ही आसमान।
पर बँधे रहो मर्यादा से
तभी होगा सदा कल्याण।।

सुभाष जैन
टोहाना (हरियाणा)

मेरा बाजा

मैं जब फूँक मारता हूँ
मेरा बाजा बोले पूँ।
चुन्नू गुड़िया सुन ले तू
मेरा बाजा बोले पूँ।।

मेले से इसको लाया
मेरे चाचू ने दिलवाया।
रंग बिरंगा सबसे अच्छा
यह खिलौना मुझको भाया।।

कहीं तोड़ ना दे कोई
इसे नहीं किसी को दूँ। ...

सब दोस्तों को दिखलाऊँगा
इसकी खूबी बतलाऊँगा।
नजर बचाकर कान पास जा
पूँ करके मैं भग जाऊँगा।।

पीछा करे अगर कोई
कभी नहीं पकड़ाई दूँ।। ...

आओ, सब जन मिलकर खेलें
कमर परस्पर पकड़ सभी लें।
लाइन में चल साथ बढ़ें तब
छुक–छुक, छुक–छुक सारे बोलें।।

इंजन बने बड़ा साथी
बाजा उसे बजाने दूँ।। ...

राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

महान दार्शनिक, अध्यात्मयोगी
स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द के बचपन का नाम था– नरेन्द्रनाथ दत्त। प्यार से सभी उन्हें नरेन्द्र या नरेन कहते थे। नरेन्द्र का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक और सेवाभावी महिला थी। उनके पिता विश्वनाथ दत्त प्रसिद्ध वकील थे और उनके परिवार की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा थी। नरेन्द्र के दादा ने गृहस्थ जीवन का त्याग कर संन्यास ले लिया था।

अध्यात्म का आकर्षण

युवा हो रहे नरेन्द्र की रुचि अध्यात्म में बढ़ने लगी। ईश्वर के अस्तित्व को लेकर उनके मन में अनेक सवाल उठते थे। जब नरेन्द्र 18 वर्ष के थे, तब एक अँग्रेज प्रोफेसर के माध्यम से उन्होंने श्री रामकृष्ण परमहंस के बारे में सुना। नवम्बर, 1881 के किसी दिन वे दक्षिणेश्वर के काली मन्दिर में रामकृष्ण परमहंस से मिलने पहुँच गए और उनसे वही प्रश्न पूछा जो वे अनेक लोगों से पूछ चुके थे लेकिन उन्हें कोई सन्तोषजनक जवाब नहीं मिला था– ''क्या आपने भगवान को देखा ?'' परमहंस ने उत्तर दिया– ''हाँ, देखा है। ठीक वैसे ही, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूँ और भी अधिक गहरी भावना के साथ।''

वह भारतीय व्यक्तित्व, जो बहुत अल्प समय में विश्व पटल पर भारतीयता की छाप छोडने में सफल रहे, उनमें विवेकानन्द का नाम सर्वोपरि लिया जा सकता है। महान विभूति का आलोक ऐसा है कि हर युवा के मन मस्तिष्क में एक अमिट छाप आज भी विद्यमान है। उनका जन्मदिवस 'युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पहली बार विश्व की हजारों चुनिन्दा विद्वजनों के बीच जब शिकागो की पहली धर्म संसद में वह अपने पहले वाक्य– 'मेरे प्यारे बहनो और भाइयो!' से सबके दिलों में उतर जाते हैं तो वो उनकी बरसों की गई साधना का ही असर है जो वाणी में सरस्वती विराजित हो नेक काज के लिए सदा प्रेरित करती है।

नरेन्द्र से विवेकानन्द का सफर

स्वामी रामकृष्ण परमहंस द्वारा उनके अन्दर के असीमित आत्मिक ऊर्जा और ज्ञान को पहचानना बेहद महत्त्वपूर्ण है। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर, अपनी बीए की पढ़ाई तक कोट पतलून पहनने वाले नरेंद्र ने एक झटके मे ही संन्यासी का गणवेश धारण कर लिया। उस सच्चे गुरु से अध्यात्म तत्त्व और वेदान्त रहस्य स्वीकार कर अपनी जिज्ञासा तृप्त की।

अपने गुरु के प्रति उनकी श्रद्धा का यह आलम था कि उनके कथन ''जो व्यक्ति दूसरों को आध्यात्मिक उपदेश देने की आकांक्षा करे, उसे पहले स्वयं उस रंग में डूब जाना चाहिए।'' को आदेश मानते हुए नौ वर्ष तक हिमालय जाकर चित्त शुद्धि और साधना में अपने आप को लीन कर लिया। कई दिनों तक भूख प्यास, नींद को संयमित करते, कड़ाके की ठंड में नग्न सोते, जंगली जानवर का सामना करते, सिद्ध महात्माओं को खोजने, सत्संग का लाभ उठाते और समीक्षक बुद्धि से उसका अध्ययन करते। जब उनकी सभी जिज्ञासाओं का समाधान मिल गया तो पहाड़ से उतर कर बंगाल, राजपुताना, बम्बई, मद्रास, संयुक्त प्रान्त आदि की यात्रा कर उपदेश देने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। धीरे–धीरे उनकी ख्याति चारों ओर

फैलने लगी। बड़े और धनी लोग भी उनके शिष्य बनते चले गए।

इन्ही शिष्यों की मदद से वे अमेरिका गए और अपने पहले सार्वजनिक उद्‌बोधन से पूरे विश्व में छा गए। अपने गुरु के आदेशानुसार वे तीन वर्ष तक अमेरिका मे रहकर वेदान्त का प्रचार करते रहे और फिर इंग्लैंड चले गए। एक वर्ष वहाँ के प्रवास में उनकी ओजपूर्ण वाणी का ऐसा असर हुआ कि पादरी भी गिरजाघर में वेदान्त पर भाषण करने लगे।

देश लौटने तक उनकी ख्याति चहुँओर फैल चुकी थी। स्वागत सत्कार की झडी लग गई। लगातार घूमते, लोगों से मिलते और हिन्दू दर्शन और वेद ज्ञान के पुनीत कार्य में अपने को भली प्रकार झोंक कर रखते। इस बीच उन्होंने दो मठ और रामकृष्ण मिशन की स्थापना भी की। अपने कार्य को लक्ष्य मानकर करते अपने स्वास्थ्य के प्रति वे उदासीन रहे जिससे वे बीमारी की चपेट में आते रहे पर लक्ष्य प्राप्ति के लिए सदैव संघर्ष से जरा भी विमुख नहीं हुए।

करुणा के सागर

उन दिनों स्वामी विवेकानन्द अमेरिका में थे। वे स्वयं अपना भोजन बनाते थे। एक दिन वे घर लौट कर भोजन की तैयारी कर रहे थे, तभी कुछ बच्चे उनके पास आए। वे भूखे थे। स्वामीजी ने सारी रोटियाँ बच्चों को बाँट दी। पास में खड़ी एक महिला यह सब देख रही थी। उसे आश्चर्य हुआ, बोली– ''आप थके हुए हैं, सारी रोटियाँ बच्चों को दे दी, अब आप क्या खाएँगे ?'' स्वामी जी बोले– ''माँ, रोटी तो पेट की भूख शान्त करती है, इस पेट में नहीं, उस पेट में सही।'' महिला की समझ में आ गया कि देने का सुख पाने के सुख से कहीं अधिक होता है।

1897 में जब प्लेग और अकाल ने भारतवर्ष को अपनी चपेट में ले लिया तो लाहौर से उन्होंने अपने भाषण में कहा– ''साधारण मनुष्य का धर्म यही है कि साधु संन्यासी, दीन दुखियों को भरपेट भोजन कराए। मनुष्य का हृदय ईश्वर का सबसे बडा मंदिर है और इसी मंदिर में उसे आराधना करनी होगी।'' उनके आह्वान पर जगह–जगह खैरातखाने और अनाथालय खुल गए। वे खुद भी बिना रुके बिना थके सेवा में लगे रहे जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता चला गया। मजबूर होकर उन्हें इंग्लैंड जाना पड़ा और कुछ दिन बाद अमेरिका। पूर्व की यात्रा में उनके द्वारा लगाया गया बीज अब वृक्ष का रूप ले चुका था। उनके अनुयायी की संख्या कई गुना बढ़ चुकी थी।

ध्येय के प्रति अडिग समर्पण

जलवायु परिवर्तन ने उनके स्वास्थ्य में सुधार लाने का काम किया और फिर वहीं पर उन्होंने सैकड़ों उद्‌बोधन दिए जिसमें दो–दो हजार व्यक्ति जमा होकर उनको मन से सुनते थे। सानफ्रांसिस्को में वेदान्त सोसायटी और शान्ति आश्रम स्थापित किया और फिर फ्रांस की यात्रा करते हुए स्वदेश लौट आए। अत्यधिक श्रम ने उनकी देह को बिलकुल तोड़कर रख दिया। सार्वजनिक सभाओं से दो साल तक दूरी बनाने की डाक्टरों की सख्त सलाह भी उन्हें अपने प्रयोजन से नहीं डिगा सकी।

कलकत्ता के अन्तिम आश्रम प्रवास के दौरान वे अकसर कहा करते कि मेरा दुनिया में काम पूरा हो चुका है। उस दौरान वे अपने शिष्य मंडली को अधिक जागरूक और ज्ञानवान बनाने में लिप्त रहे। जुलाई 1902 को अचानक वे समाधिस्थ हो गए। दो घंटे बाद शिष्यों को पाणिनीय व्याकरण और उसके बाद तीन घंटे वेदोपदेश करते पूर्ण स्वस्थ लग रहे थे। शाम को थोड़ा टहलने के उपरान्त माला जपते फिर समाधिस्थ हो गए। उसी रात वे भौतिक शरीर को त्याग कर परमधाम को सिधार गए।

तीक्ष्ण बुद्धि, अद्‌भुत स्मरण शक्ति और लक्ष्य के प्रति अद्वितीय समर्पण भाव, उनको महान रूप में जनमानस में स्थापित करते हैं और कई भावी पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे।

संदीप पाडे
अजमेर (राजस्थान)

बूझो तो जानें

1

लाल रंग, चिकना बदन,
थोड़ा खट्टा स्वाद।
घर घर बनते मुझसे,
सब्जी और सलाद।

2

रंग सलेटी या श्वेत,
शान्ति दूत कहलाता।
भोला सा पक्षी वह,
दाने चुग चुग खाता।

3

गोल गोल आकार,
कई खेलों की है जान,
उस पर होते है प्रहार,
तुरन्त बताओ नाम।

4

अन्त कटे तो बनता लोहा,
आदि कटे से हार।
तीन अक्षर का मेरा नाम,
करता लोहे का व्यापार।

5

काले रंग का पंछी वह,
काँव काँव करता रहता।
सब कुछ खा जाता है,
घर-घर फिरता रहता।

पारस चन्द जैन
देवली (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

'मददगार नन्हा दोस्त' पृष्ठ 7 का शेष....

अब ईशान ने पुलिस को सूचना दी। इंटरनेशनल मामला जानकर पुलिस कुछ ही देर में आ गई। पुलिस आ तो गई मगर उनके सामने भी वही समस्या थी कि उनमें से किसी को रशियन नहीं आती थी और न ही उनके पास कोई अनुवादक था। ईशान ने इस मामले में फिर से एक बार पुलिस की मदद की। इस सारे घटनाक्रम में चार पाँच घंटे का समय लग गया।

शाम हो चुकी थी। विदेशी होने के कारण मामला हाई फाई था। इसलिए पुलिस भी फूँक–फूँक कर कदम रख रही थी। वे उस महिला को अपने साथ सुरक्षा में ले गए। उसे होटल में ठहराया और शीघ्र कार्रवाई करते हुए अपराधियों को गिरफ्तार किया। और उन्हें ससम्मान रूसी दूतावास में भी पहुँचा दिया।

संचार माध्यमों की रिपोर्टिंग से अगले दिन इस सारे घटनाक्रम की सूचना लोगों तक पहुँची। इतने छोटे ईशान की इतनी बड़ी समझदारी से लोग हैरान रह गए। स्कूल में प्रधानाचार्य अध्यापक सहपाठियों ने ईशान को बधाई दी। ईशान के इस उम्र से बड़े काम ने 24 घंटे के भीतर अपराधियों को पकड़वा दिया।

विद्यालय में ईशान को सम्मानित किया गया। ईशान को महिला और बाल विकास मन्त्रालय भारत सरकार की ओर से 2020 का 'वीरता कोटि' में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार देने की घोषणा हुई। देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने गणतन्त्र दिवस से पूर्व देश के अन्य प्रतिभाशाली बच्चों के साथ ईशान को यह पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश)

बच्चों की खुशहाली के लिए सचेष्टः गौरी निम्बालकर

पहले माना जाता था कि बच्चों पर किसी प्रकार का सामाजिक आर्थिक दबाव नहीं होता। वे तो खेलकूद में मस्त रहते हैं और खुशहाल रहते हैं। लेकिन वर्तमान में बच्चों में मानसिक समस्याएँ बढ़ती ही जा रही है, विश्व स्वास्थ्य संगठन का ऐसा मानना है।

बच्चों में अवसाद की समस्या से चिन्तित बैंगलुरू की गौरी निम्बालकर ने किसी ऐसी संस्था से जुड़ने का निश्चय किया जो बच्चों की खुशहाली के लिए काम करती हो। लेकिन खोज करने पर पता चला कि हमारे देश में ऐसी संस्थाओं की बड़ी कमी है। इस पर गौरी ने खुद ही बच्चों द्वारा, बच्चों के लिए संचालित, बच्चों की खुशहाली के लिए काम करने वाली संस्था 'यूथ वेल बीइंग' (Youth well being) की स्थापना की।

गौरी कहती हैं कि जिन्दगी में सफलता के लिए तन की सेहत के साथ–साथ मन की सेहत का ध्यान रखना भी जरूरी है। आपको अपने हमउम्र साथियों को मानसिक पीड़ा देने, सताने, बेवजह चिढ़ाने या उन्हें नीचा दिखाने की किसी भी कोशिश से दूर रहना चाहिए। निजी स्तर पर मदद करने के अलावा अगर आप चाहे तो इसके लिए एक अच्छी संस्था बना सकते हैं। इसमें पड़ोसी, मित्रों, परिजनों आदि को शामिल किया जा सकता है। लेकिन सबसे पहले आपको बाल मनोविज्ञान की खूब सारी किताबें, रिसर्च पेपर और आर्टिकल पढ़ने चाहिए।

3 साल की उम्र से संगीत सीख रही गौरी हिन्दुस्तानी और कर्नाटक म्यूजिक में पारंगत हो चुकी है। गौरी पॉज नामक बैंड में युवा म्यूजिशियन के तौर पर काम करती है। यह बैंड सामाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ है। पॉज का अर्थ है– परफॉर्म फॉर अ कॉज। यह बैंड सार्वजनिक स्थानों, मेलों, मॉल्स आदि में अपनी कला का प्रदर्शन करता है। कंसर्ट से प्राप्त चन्दे की रकम को सामाजिक

भलाई के कामों में खर्च किया जाता है। इसके माध्यम से गौरी और उसके साथियों ने अब तक कई दिव्यांग लड़कियों की मदद की है ताकि वे सुगमता से शिक्षा प्राप्त कर सकें।

आत्मविश्वास और लीडरशिप के गुणों से लबरेज गौरी कहती हैं कि किसी भी काम को करने में उम्र, लिंग या दूसरी बातें मायने नहीं रखती। बस आपके इरादे नेक और बुलन्द होने चाहिए। गौरी इन दिनों संयुक्त राष्ट्र के जेंडर इक्वलिटी फोरम के साथ काम कर रही है। यह फोरम लिंग आधारित समस्याओं पर काम करता है और ऐसे मामलों को बड़े मंचों पर उठाता है। गौरी महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक व कानूनी अधिकारों और सेहत पर भी काम कर रही है। उसने जेंडर इक्वलिटी फोरम में पब्लिक स्पीकर की भूमिका निभाई है।

गौरी कविताएँ, किस्से और कहानियाँ भी लिखती है। उसे बेकिंग, पब्लिक स्पीकिंग और गायकी का भी शौक है ।

शिखरचन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

रंजन ने माफी माँगी

रंजन नटखट बालक था। वह प्रायः अपने दोस्तों से डींगें हाँकता रहता था। पक्षियों को वह अपनी गुलेल से निशाना बनाकर प्रसन्न होता था। उनके घोसलों से बच्चे निकाल लाता। फिर उन्हें आसमान में उछालता। एक बार तो उसने एक फाख्ता के बच्चे को बार–बार आसमान में उछाल–उछाल कर इतना थका दिया कि उसकी साँस फूल गई। सातवीं बार जब रंजन ने उसे जोर से उछाला तो वह सड़क पर जा गिरा और वहीं पर उसने दम तोड़ दिया।

रंजन का एक दोस्त था रमेश। लेकिन उसका स्वभाव उसके स्वभाव से बिलकुल ही विपरीत था। उसका घर रंजन के घर से कुछ दूर था। रमेश के घर में कहीं से एक बिल्ली आकर रहने लगी थी। रमेश बिल्ली से स्नेह करता था।

एक दिन जब रंजन को पता चला कि रमेश के घर में बिल्ली ने पाँच बच्चों को जन्म दिया है तो उसके मन में एक शरारत आई। वह उसके घर गया और देखा, पाँचों बच्चे बहुत प्यारे थे। मोटे–ताजे। बाकी सभी के रंग तो काले थे लेकिन एक बच्चे का रंग भूरा था। अब भूरे रंग के बच्चे को रंजन ने क्या देखा, समझो उस बेचारे की तो शामत ही आ गई।

रंजन के घर के बाहर एक गैरेज था। उसी गैरेज के एक कोने में बिल्ली अपने बच्चों के साथ रहती थी। रमेश ने उसके लिए एक छोटा सा 'घर' बनाया हुआ था। जब वह गैरेज के लोहे का गेट अकसर बन्द ही रखता था क्योंकि गली में कई बार कोई आवारा कुत्ता घूमता हुआ उधर आ निकलता था। रमेश को यही डर लगा रहता था कि कहीं कोई बच्चा किसी कुत्ते का शिकार न हो जाये।

एक शाम को रंजन रमेश के घर आया। उसने रमेश को अपने पापा के साथ बाजार जाते हुए देख लिया था। जब रमेश घर आया तो उसने देखा बिल्ली मारी–मारी सी इधर–उधर म्याऊँ–म्याऊँ करती परेशान घूम रही है मानो किसी को ढूँढ़ रही हो। वह कभी अन्दर जाती थी कभी बाहर। कभी पड़ौसियों की दीवारों पर चढ़ती और फिर उतर कर बच्चों के पास आ जाती।

रमेश ने बिल्ली की ऐसी स्थिति पहले कभी नहीं देखी थी। वह गैरेज में आया। उसने ध्यानपूर्वक देखा, भूरा बच्चा गायब था।

रमेश चिन्ता में पड़ गया। सोचने लगा– ''कहीं किसी कुत्ते ने उसे अपना शिकार तो नहीं बना लिया ?'' फिर सोचता– ''नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। गैरेज का गेट तो वह अच्छी तरह बन्द करके गया था।

फिर सोचता– ''कहीं कोई उठाकर तो नहीं ले गया ?'' उसने मम्मी से पूछा तो उन्होंने भी इस घटना पर हैरानी प्रकट की। रमेश मम्मी पर गुस्से होने लगा कि उन्होंने भूरे बच्चे का ख्याल क्यों नहीं रखा लेकिन मम्मी ने कहा कि वह तो रसोई में खाने की तैयारी में व्यस्त थी। इसलिए उसे पता नहीं चला कि भूरा बच्चा कहाँ लापता हो गया है?

रमेश किस पर शक करे किस पर नहीं ? बड़ी विचित्र–स्थिति पैदा हो गई। रमेश ने पड़ौसियों के घरों में जाकर देखा लेकिन भूरा बच्चा न मिला। वह छत पर भी गया। आसपास के गटर भी देखे। सोच रहा था कहीं किसी गड्ढ़े में न गिर गया हो।

उधर रंजन बहुत प्रसन्न था। बिल्ली के भूरे बच्चे को उठाकर लाने वाला रंजन ही था। रात पड़ गई थी। पहले तो रंजन ने मम्मी–पापा को भूरे बच्चे के बारे में नहीं बताया क्योंकि वह दबे पाँव बच्चे को लेकर दूसरी मंजिल पर चला गया था। उसके साथ खेलता रहा। वह नीचे आता था तो कुछ समय के पश्चात् फिर ऊपर चला जाता था।

मम्मी को उसकी ऐसी हरकत पर कुछ शक हुआ। मम्मी ने उसे खाना खाने के लिए आवाज दी तब भी न आया। मम्मी ने सोचा– ''आखिर ऐसी क्या बात है जो कई बार ऊपर मंजिल पर जा चुका है।'' मम्मी दबे पाँव दूसरी मंजिल पर गई तो देखकर दंग रह गई। बिल्ली का एक भूरा बच्चा परेशान अवस्था में म्याऊँ–म्याऊँ करता हुआ सीढ़ियाँ उतरने का बार–बार प्रयास कर रहा था लेकिन रंजन ने उसका रास्ता रोका हुआ था।

रंजन ने उसे एक बाल्टी में डाल दिया। उसे डर था कि कहीं बच्चा नीचे न आ जाए। ''अरे यह क्या?'' अचानक मम्मी की आवाज ने रंजन को चौंका दिया। रंजन की तो जैसे सिट्टी–पिट्टी ही गुम हो गई। ''मम्मी, मैं मैं...।'' रंजन मैं मैं करता रहा। वह अपनी बात पूरी न कर पाया। मम्मी ने पूछा– ''कहाँ से लेकर आये हो इस मासूम बच्चे को ?'' अब रंजन को सच बताना ही पड़ा।

तब तक पापा भी ऊपर आ चुके थे। पापा ने भी रंजन की इस हरकत पर नाखुशी जाहिर की।

पापा बोले– ''रंजन, आपको पता है कि इसकी माँ की क्या हालत होगी? आप देख रहे हो न, माँ के बगैर यह कैसे परेशान होकर उसे ढूँढ़ रहा है ? तुमने इसे उठाकर अपना गुलाम बना लिया है। क्या ऐसी गुलामी आपको भी पसन्द है?''

''ऐसी गुलामी ? नहीं नहीं, पापा प्लीज ऐसा मत कहें।'' रंजन एकदम बोला।

मम्मी ने सवाल किया– ''तो फिर एक मासूम बच्चे को अपनी खुशी के लिए उसकी माँ से छीन कर अपना गुलाम बनाकर रखना कहाँ की समझदारी है ?''

रंजन को महसूस हुआ जैसे सचमुच उसने ऐसा करके अपराध किया है। वह बोला– ''पापा, मैं कल सुबह होते ही इसे रमेश के घर छोड़ आऊँगा।''

पापा बोले– ''बेटा, तब देखना यह काम करके तुम्हें कितनी खुशी और संतोष मिलेगा।''

रंजन बोला– ''सॉरी मम्मी–पापा। मुझसे बड़ी भूल हो गई थी। पापा चलिए अभी चलते हैं। मुझे अपनी गलती के लिए दोनों से क्षमा भी माँगनी है।'' मम्मी ने उत्सुकता से पूछा– ''दोनों? दोनों कौन ?''

रंजन हँसता हुआ बोला– ''एक बिल्ली से और एक अपने दोस्त रमेश से।'' थोड़ी देर के बाद पापा अपनी बाईक पर रमेश के घर की तरफ जा रहे थे। उनके पीछे रंजन अपनी बगल में बिल्ली का भूरा बच्चा लिये बैठा हुआ था।

डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'
पटियाला (पंजाब)

घर वह स्थान हो जहाँ रहने में परिवार को जहाँ आने में अतिथि को आनन्द हो।

घर वह स्थान हो जहाँ बच्चे सुख, युवक प्रेम और वृद्ध शान्ति से रह सके।

वर्ग पहेली

– सुधा जौहरी
जयपुर (राजस्थान)

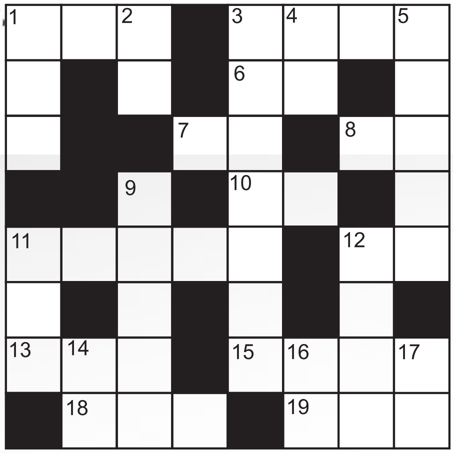

बाएँ से दाएँ

(1) 15 अगस्त 1947 को भारत .... हुआ था (3)

(3) सुहासिनी, ... भाषिणी, सुखदां रदां मातरम् (4)

(6) बहिनें .... के राखी बाँधती है (2)

(7) खजाना (2)

(8) एक फल जिसमें लौहतत्त्व बहुत होता है, कश्मीर का प्रसिद्ध है (2)

(10) दुर्गा का प्रचंड रूप (2)

(11) वन्दे मातरम् के रचनाकार (3,2)

(12) अवयव जिससे हम सुनते हैं (2)

(13) किसानों द्वारा दिया जाने वाला कर (3)

(15) बड़ा कक्ष जिसमें मीटिंग आदि होती है (4)

(18) प्राचीनकाल में बाहर से आकर आक्रमण करने वाले विधर्मी कहलाते थे (3)

(19) .... ताल, यानी तैरने का तालाब (3)

ऊपर से नीचे

(1) पराधीन न रहकर अपना शासन स्वयं सँभालना जो हर देश का अधिकार (3)

(2) दु:खी, जैसे दास अपने मालिक के क्रूर व्यवहार से रहते हैं (2)

(3) भारत के इस सपूत ने अँग्रेजों से लड़ने को एक सेना बनाई (3,2,2)

(4) इस माह की एक तारीख को मजदूर दिवस मनाते हैं (2)

(5) श्रावण की पूर्णिमा का पावन पर्व (2,3)

(9) मनुष्य जैसा विशालकाय हिमालय में रहने वाला जीव (2,3)

(11) कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कर्मभूमि यही राज्य है (3)

(12) श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के .... (जेल) में हुआ (4)

(14) हमारा पवित्र दुधारू पशु जिसे माँ मानते हैं (2)

(16) भारत के पूर्वी प्रान्तों व दक्षिण का मुख्य भोजन (2)

(17) युद्ध (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि जो अच्छे स्वभाव के मनुष्य होते हैं, उनको बुरी संगति भी बिगाड़ नहीं पाती। जैसे कि चन्दन के वृक्ष से जहरीले साँप लिपटे रहने पर भी उस पर कोई जहरीला प्रभाव नहीं डाल पाते।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करी सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापे नहीं, लिपटे रहत भुजंग॥

ध्वज तिरंगा प्यारा

हमें ध्वज तिरंगा प्यारा है
यह भारत का ध्रुवतारा है।।

पिंगली वेंकैया जी ने
ध्वज को सुन्दर रूप दिया।
केसरिया और हरे रंग से
दोरंगा रंग रूप दिया।।

दो रंगों के बीच श्वेत रंग
जुड़ा बाद में न्यारा है।...

केसरिया बलिदान सिखाता
श्वेत रंग से पवित्रता।
हरा रंग है आशाओं का
तीनों रंग में विचित्रता।।

एक राष्ट्रध्वज के नीचे हम
सबमें भाईचारा है।...

श्वेत रंग की पट्टी में है
अशोक चक्र का रंग नीला।
चक्र में हैं चौबीस तीलियाँ
धर्म प्रतीक है गर्वीला।।

राष्ट्रगान के साथ गूँजता
'वंदे मातरम' नारा है।...

ध्वज का आदर मान करें हम
नत–मस्तक हो जाएँ।
कभी न ध्वज जमीन पर फेंकें
क्षति न लेश पहुँचाएँ।

देशभक्ति का पाठ पढ़ाता
यह सबका बना दुलारा है।
हमें ध्वज तिरंगा प्यारा है।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

मैं वीर सिपाही

मैं भारत का वीर सिपाही,
रहता हूँ सीना ताने।
सीमा की रखवाली करता,
गाता मैं ओज तराने।।

एक अकेला ही दुश्मन के,
मैं छक्के छुड़वाता हूँ।
अपने भुजबल के दम पर मैं,
सबको मार गिराता हूँ।।

दुश्मन कोई भी हो
सबके सब घबराते हैं।
देख हिन्द की वर्दी खाकी,
उल्टी दौड़ लगाते हैं।।

पहले दुश्मन को रौंदूँ मैं
अपने कदमों के नीचे।
दूजे को उछालूँ गगन में
तीजे को रखता भींचे।।

चौथे का पकडूँ गिरेबान,
सबको ही धूल चटा दूँ।
दुश्मन मार गिरा दूँ या फिर,
अपना ही शीश कटा दूँ।।

दुनिया भर की फौज हमारी,
ताकत को है पहचाने।
मैं भारत का वीर सिपाही,
रहता हूँ सीना ताने।।

गोविन्द भारद्वाज
अजमेर (राजस्थान)

बोतल का जिन्न

पात्र– अतुल, जिन्न बालक– नीलम

आवश्यक सामग्री– एक नीली काँच की बोतल, एक नीली या अन्य रंग की टोपी

दृश्य–1

(अतुल जंगल में लकड़ियाँ बीनने का अभिनय कर रहा है।)

अतुल : उफ! मैं तो तंग आ गया रोज–रोज लकड़ियाँ बीनते–बीनते। स्कूल जाओ, होमवर्क करो, फिर लकड़ियाँ भी बीनो। माँ तो कह देती है– बेटा स्कूल से आते वक्त लकड़ियाँ तो लानी ही पड़ेंगी, वरना चूल्हा कैसे जलेगा ?... हम गरीब हैं ना।... चलूँ आज के लिए तो ये लकड़ियाँ काफी हैं। मुझसे अब और काम नहीं होता। (लकड़ियों का बंडल उठाने का अभिनय करता है।)

(तभी उसे ठोकर लगती है, पैरों से कुछ टकरा जाता है)... अरे। यह क्या है ? (उठाकर देखता है, वह एक नीले रंग की कुछ अलग प्रकार की बन्द बोतल है।) यह कैसी बोतल है ? बड़ी अजीब आकृति है इसकी। फेंकी होगी किसी ने... मुझे क्या ?

(बोतल को एक ओर फेंकता है। तभी किसी के अट्टहास की आवाज सुनाई पड़ती है। अतुल पहले तो डरकर पीछे हटता है फिर भौंचक्का–सा खड़ा देखता रहता है। एक ओर से अट्टहास करता हुआ नीली टोपी पहने जिन्न बना हुआ बालक आता है। उसे देखकर अतुल डर जाता है और भागने को होता है।)

नीलम : हा.. हा.. हा.. रुको अतुल, डरो मत। मैं जिन्न हूँ मगर मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। मेरा नाम नीलम है।

(अतुल रुक जाता है और मुड़कर देखता है)

अतुल : तुम मेरा नाम कैसे जानते हो ?

नीलम : जो मेरी मदद करता है मैं उसके बारे में सब जान लेता हूँ।... यहाँ आओ अतुल! तुमने तो मुझे इस बोतल से बाहर निकालकर मेरी मदद की है दोस्त। कितने वर्षों से मैं इसमें बन्द पड़ा इधर–उधर ठोकरें खा रहा था। (अँगड़ाई लेता है) मैं तुम्हारा आभारी हूँ दोस्त।... तुम्हें कोई भी काम हो तो मुझे बताना। मैं तुम्हारा सब काम यूँ चुटकियों में पूरा कर दूँगा।... हा.. हा.. हा.. हा...।

अतुल : (थोड़ा डरते हुए पास आता है) नीलम... क्या तुम कुछ भी कर सकते हो ?

नीलम : हाँ, हाँ, तुम कहकर तो देखो... हा...हा...हा...

अतुल : (सामान्य होते हुए) अच्छा तो नीलम मुझे

थोड़ी सूखी लकड़ियाँ और ला दो। (नीलम जाने लगता है) रुको! मुझे भूख भी बहुत लगी है—(झिझकते हुए) हो सके तो कुछ पेस्ट्री और मिठाई भी ला दो। ला दोगे ना ?

नीलम : हा.. हा.. हा... अवश्य ला दूँगा मेरे दोस्त। मैं अभी आया हा.. हा.. हा...।

(नीलम एक ओर जाता है)

अतुल : वाह... अब मजा आएगा। अब तो मैं सारा काम नीलम से फटाफट करवा लूँगा। स्कूल का होमवर्क भी ये भाई कर देंगे। अब मैं तो आराम करूँगा... सिर्फ आराम। हा.. हा.. हा.। (नीलम वापस आता है।)

नीलम : ये लो मेरे दोस्त... लकड़ियाँ और तुम्हारे लिए पेस्ट्री और मिठाइयाँ... (सामग्री देने का अभिनय करता है, अतुल लेकर खुश होता है और नाचने —गाने लगता है।)

अतुल : अब तो जीवन में आराम ही आराम है,
अब तो नीलम भाई को करने सारे काम हैं।
ढेरों मिठाइयाँ और केक—पेस्ट्री खाऊँगा,
होमवर्क भी अपना इन भाई से करवाऊँगा,
मौज—मस्ती, खेलकूद ही अपना काम है,
अब तो नीलम भाई को करने सारे काम हैं।
(नीलम भी अतुल के साथ नाचता है।)

नीलम : मेरे दोस्त! तुझे अब करना आराम है,
तेरे इस भाई को करने सारे काम हैं।

अतुल : अब तो जीवन में आराम ही आराम है,
अब तो नीलम भाई को करने सारे काम हैं।

(दोनों गाते—हँसते रुकते हैं तो अतुल थककर बैठ जाता है)

दृश्य—2

(अतुल उदास बैठा है। जिन्न बालक नीलम आता है।)

नीलम : क्या बात है अतुल, उदास क्यूँ बैठे हो ? मुझसे कोई गलती हो गई क्या ?

अतुल : नहीं भाई, तुम तो मेरी बड़ी सेवा कर रहे हो। आजकल बिना काम के खूब आराम और ढेर—सारी चीजें खाने को मिल रही हैं।

नीलम : तो फिर उदास क्यूँ हो ? तुम मुझे बताओ क्या बात है ? मैं अभी चुटकी में सब ठीक कर दूँगा।

अतुल : क्या बताऊँ नीलम। इन दिनों किसी भी चीज में मन नहीं लगता। सारा शरीर जैसे अकड़—सा गया है। दिन भर सोता हूँ। फिर भी हाथ—पैर दर्द करते हैं और दो—तीन दिनों से तो नींद भी ठीक से नहीं आ रही है। स्कूल में पढ़ाई में बिलकुल मन नहीं लगता, कुछ समझ ही नहीं आता।

नीलम : अच्छा तो ये बात है... (धीरे—धीरे मुस्कुराने लगता है।)

अतुल : तुम मेरे लिए ढेरों मिठाइयाँ ला सकते हो, पर अब कुछ खाने की इच्छा ही नहीं रही। भूख ही नहीं लगती। नीलम भाई, मैं बहुत परेशान हो गया हूँ। क्या करूँ कुछ समझ नहीं आता।

(नीलम कुछ पल सोचता है, फिर हँसने लगता है।)

अतुल : ये क्या जिन्न भाई! मैं तो दुःखी हो रहा हूँ और तुम हँस रहे हो।

नीलम : दोस्त, मैं तुम्हारे दुःख का कारण जान गया हूँ।

अतुल : (उत्साहित होकर) जान गये हो, तो बताओ ना, जिन भाई।

नीलम : दोस्त, मेरी बात सुनकर नाराज मत होना। वास्तव में, तुम्हारा सारा होमवर्क मैं कर देता हूँ तो तुम्हें कुछ समझ में कहाँ से आएगा? तुम आजकल बिलकुल भी शारीरिक मेहनत नहीं करते हो, कोई काम नहीं करते हो इसलिए शरीर का अकड़ना स्वाभाविक है। रोजाना बिना मेहनत ढेर सारी चीजें खाते हो तो भूख तो मर ही जाएगी ना। कुछ समझे दोस्त ?

अतुल : इसका मतलब, सारे काम तुम पर डालकर मैंने खुद को बीमार कर लिया है।

नीलम : हाँ, यही हुआ है दोस्त। हा... हा... हा...।

आओ पढ़ें : नई किताबें

शिक्षिका और बाल साहित्यकार विमला नागला की बाल कहानियों की नई पुस्तक ''कहानी का जादू'' अपने नाम को सार्थक करती है। इसमें भिन्न रंग व ढंग की 11 कहानियाँ है जिसे पढ़ने पर खुशी और शिक्षा दोनों मिलती है। घर परिवार के साधारण पात्रों पर रची इन कहानियों में जीवन की वास्तविकता का अच्छा संदेश है। कहानियों में सहजता व रोचकता का समुचित समावेश है। इन कहानियों की भाषा सरल व बोधगम्य है। पुस्तक का नाम और आवरण भी आकर्षक है। बड़े अक्षरों में छपी सचित्र, सजिल्द पुस्तक बच्चों को मनभावन लगेगी।

पुस्तक का नाम : कहानी का जादू — **लेखक :** विमला नागला
मूल्य : 150 रुपये — **पृष्ठ :** 64
प्रकाशक : राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रचार समिति, बीकानेर (राजस्थान) — **संस्करण :** 2021

(जिन्न नाचता—गाता हैं)

अब तो जिन्न भाई को करने सारे काम हैं।
अब तो जिन्न भाई को करने सारे काम हैं।
हा... हा... हा...

अतुल : (थोड़ा नाराज होकर) तब तो मैंने तुम्हें बोतल से निकालकर बहुत बड़ी भूल की है। जिन्न भाई तुम अब वापस बोतल में चले जाओ। मुझे अब तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है।

नीलम : (हँसता है) हा... हा... हा...। मेरी आवश्यकता नहीं है हा... हा... हा... फिर तुम्हारे सारे काम कौन करेगा?

अतुल : अपने सारे काम मैं खुद कर लूँगा। और हाँ, मुझे तुम्हारी मिठाइयाँ, केक—पेस्ट्री इत्यादि भी नहीं चाहिये। तुम वापस चले जाओ, अब मेरे पास कभी मत आना।

(जिन्न बालक नीलम अट्टहास करता हुआ दूसरी ओर चला जाता है।)

उमेशकुमार चौरसिया
अजमेर (राजस्थान)

चित्र पहेली

नीचे कौनसा देशभक्त राष्ट्रीय तिरंगे झंडे को हाथ में लिए जा रहा है? एक से 52 तक के बिन्दु मिलाकर उसे आप भी देखिए

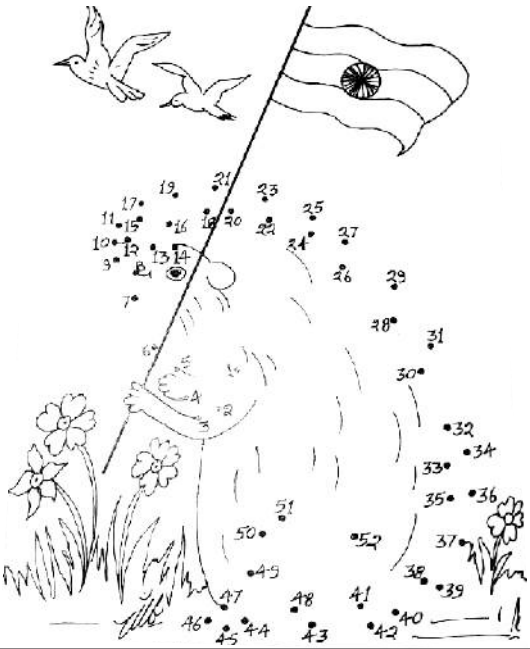

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

सत्यकथाः संकल्प से सफलता की

यह लड़का रोज सुबह अपने मवेशी चराने के लिए जंगल में जाता तो इसके कंधों पर लाठी की बजाय एक बहँगी लटकी होती और उसमें एक फावड़ा और कुछ दूसरी चीजें रखी होती। ये लड़का कौन था और अपने साथ ये दूसरी चीजें क्यों ले जाता था? ये सब जानने के लिए छत्तीसगढ़ चलते हैं।

छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में एक गाँव है जिसका नाम है साजा पहाड़ गाँव। यह कोरिया जिले के चिरमिरी क्षेत्र के वार्ड नंबर एक में पड़ता है। यहाँ के लोग सालों से पानी की समस्या से बुरी तरह से जूझ रहे थे। गाँव में पानी के स्रोत के रूप में केवल कुछ पुराने कुएँ ही थे जिनका पानी गाँव वालों के लिए पूरा नहीं पड़ता था। गाँव के लोगों के सामने मवेशियों को पानी पिलाने की सबसे बड़ी समस्या थी, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए ? सरकार की तरफ से भी गाँव वालों को कोई मदद नहीं मिली। गाँव की हालत यह है कि न तो गाँव तक पहुँचने के लिए कोई सड़क है और न गाँव में बिजली ही है।

इसी अभावग्रस्त साझा पहाड़ गाँव में ये बहँगी वाला लड़का रहता था जिसका नाम है— **श्यामलाल राजवाड़े** । श्यामलाल की उम्र 15 साल की थी तो वह मवेशी चराने के लिए पास के जंगल में जाता था। घास चरने के बाद पशुओं को प्यास लगती तो इधर–उधर भागने लगते क्योंकि वहाँ आसपास पानी का कोई साधन नहीं था। लोग चाहते तो आपसी श्रमदान द्वारा पानी की समस्या को हल किया जा सकता था लेकिन यह बात किसी के मन में नहीं आई। तभी श्यामलाल ने गाँव में खुद एक तालाब खोदने का फैसला किया। जब गाँव वालों को उसके फैसले के बारे में पता चला तो लोग उसे सहयोग देने की बजाय उसकी हँसी उड़ाने लगे। लेकिन श्यामलाल ने लोगों की कोई परवाह नहीं की।

श्यामलाल ने गाँव के पास जंगल में अच्छी सी जगह देखकर तालाब खोदने का काम शुरू कर दिया। वह रोज अपने पशुओं को वहाँ चरने के लिए छोड़ देता और खुद तालाब की खुदाई करने लग जाता। वह अपने फावड़े से मिट्टी खोदता और उसे अपनी बहँगी में भर–भर कर बनने वाले तालाब के चारों ओर डालता रहता। धीरे–धीरे तालाब गहरा होता गया और उसके चारों ओर मेड़ भी बनती गई। वह अकेला ही सालों तक अपने काम में लगा रहा और लगभग एक एकड़ जमीन में 15 फीट गहरा तालाब खोद डाला। श्यामलाल को इस तालाब को खोदने में पूरे सत्ताइस–अठाइस साल लग गए यानी लगभग 10000 दिन। जब यह खबर जिले के अधिकारियों व नेताओं तक पहुँची तो सबने श्यामलाल की खूब तारीफ की। एक स्थानीय प्रतिनिधि ने अपने सहायता कोष से उसे 10000 रुपये भी दिए।

अब तालाब बन जाने के बाद गाँव के लोग भी बहुत खुश हैं क्योंकि श्यामलाल द्वारा खोदे गए इस तालाब से गाँव के लोगों का जीवन बदल गया है। अब उन्हें पानी के लिए इधर–उधर नहीं भटकना पड़ता। लोग जब श्यामलाल के इस काम की प्रशंसा करते हैं तो उसे बड़ी खुशी होती है। लेकिन उसका कहना है कि यदि इस काम में गाँव के लोगों ने भी उसकी मदद की होती तो बहुत पहले ही यह तालाब खुद कर तैयार हो जाता और लोगों की परेशानी बहुत पहले ही दूर हो जाती।

अब श्यामलाल 42 साल का हो चुका है और अपने इस काम के लिए पूरे इलाके में प्रसिद्ध है। श्यामलाल का यही कहना कि उसने समाज सेवा के लिए तालाब खोदा है। लोगों को खुश देखकर वह भी बहुत खुश हैं। यदि श्यामलाल जैसे अदम्य साहसी व संकल्पवान के साथ पूरा समाज एकजुट हो जाएँ तो संसार की तस्वीर ही बदल जाए।

सीताराम गुप्ता
दिल्ली

लड़की का रोल मिला था। वह दर्शकों के प्रति अति उत्साहित था, पर्दा खिसका कर बार–बार बाहर देख रहा था। तभी उसकी नजर दर्शक दीर्घा में बैठे अपने पिताजी पर चली गयी।

साठ साल के बूढ़े रामसिंह अपनी मोटी लाठी लिये बैठे थे। दोनों हाथों के बीच लाठी को जमीन से टिकाये सीधी खड़ी कर रखे हुए थे। मंच के कलाकार हों या मंच की ओर टकटकी बाँधे दर्शक, सबकी नजर पहले रामसिंह की लाठी पर ही पड़ रही थी। देखने वालों की नजर उनकी लाठी की मूठ से फिसल कर नीचे उनकी विशाल पगड़ी पर अटक जाती थी।

नाटक में शर्म कैसी?

मानपुर गाँव में नाटक बहुत धूमधाम से खेला जाता था। उस दिन भी नाटक का आयोजन किया गया था। गाँव का नाटक था और देखने वाले भी गाँव के ही थे। बाजार में इमली के पास मंच तैयार कर उसके सामने कुछ कुर्सियाँ व दरी बिछा दी गयी थी। गाँव के लोग आकर उस पर बैठते जा रहे थे।

मंच से सटे ग्रीन रूम में कलाकार अपना मेकअप कर रहे थे। गाँव की बात ठहरी। छोटे बच्चे परदा हटा–हटा कर कलाकारों को निहार रहे थे। उन्हें यह जानने की उत्कंठा लगी थी कि गाँव का कौन व्यक्ति नाटक में क्या अभिनय कर रहा है? नाटक के नये कलाकारों को भी जिज्ञासा बनी हुई थी। उन्हें जिज्ञासा थी कि उनका नाटक देखने गाँव के कौन–कौन लोग आये हुए हैं ? वे मंच से झाँक कर बाहर देख रहे थे कि गाँव के कौन लोग कहाँ बैठे हुए हैं ? नाटक की तैयारी पूरी हो चुकी थी। कुछ देर में मंगलाचरण के बाद नाटक खेला जाना था।

बाबू रामसिंह के बेटे विचित्र सिंह ने भी नाटक में भाग लिया था। वह पहली बार अभिनय करने वाला था। रिहर्सल काफी अच्छा हुआ था। उसे

विचित्र की नजर अपने पिता पर पड़ने की देर थी। उसकी हालत खराब हो गयी। नाटक में भाग लेने का उसका सारा उत्साह बूढ़े पिता के हाथ में पकड़ी हुई लाठी देखकर ठंडा पड़ने लगा। वह पेशोपेश में पड़ गया। भय से उसे पसीना आने लगा। पसीना पोंछने के चक्कर में उसका सारा मेकअप भी खराब हो गया।

गाँव के गंगा साव का बेटा मंगू नाटक का निदेशक था। वह विचित्र के पास आकर बोला– ''अरे, अब परदा उठने वाला है, तुम यहाँ खड़े हो? मंगलाचरण के बाद पहला रोल तुम्हारा ही है।''

''लेकिन मैं रोल नहीं करूँगा।'' विचित्र सिंह की यह बात सुनकर निदेशक को बहुत विचित्र लगा। वे बोले– ''तुम कैसी बात करते हो? तुमने इतनी मेहनत से रिहर्सल किया है। तुम्हारा अभिनय भी बहुत अच्छा हुआ है। फिर डर किस बात का? चलो–चलो! एक बार मंच पर चले जाओगे तो सब झिझक खत्म हो जायेगी।''

''नहीं, नहीं! मैं न तो मंच पर जा सकता हूँ और न कोई अभिनय कर सकता हूँ; क्योंकि ...।''

''क्योंकि तुम्हें भय लग रहा है कि अभिनय ठीक होगा या नहीं!'' निदेशक उसे समझाने के लिए बीच में ही बोलने लगे।

''नहीं ! बात ऐसी है कि...।''

''हाँ... हाँ... ! मैं समझ गया। बात ऐसी है कि स्त्री के रोल में गाँव वालों के सामने जाने में तुम्हें शर्म आ रही है।''

''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। दरअसल..।'' विचित्र बोल ही रहा था कि निदेशक फिर बीच में बोलने लगे– ''शुरू–शुरू में ऐसा होता है। लेकिन तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है। तुम बुलन्दी के साथ अपना अभिनय करो।''

विचित्र की पूरी बात सुने बिना निदेशक बीच में ही बोलने लगते थे। पर्दे की ओट से झाँकते हुए उसने बाहर की ओर इशारा किया और कहा–''मुझे किसी बात की शर्म नहीं आ रही है। मैं तो बस एक ही बात के कारण हिचक रहा हूँ। वे जो सामने बैठे हुए।''

''ओहो!'' निदेशक फिर बिना पूरी बात सुने बीच में बोलने लगे– ''तुम इसीलिए डर रहे हो कि मंच के ठीक सामने छोटे–छोटे बच्चे बैठे हुए हैं। लेकिन वे तुम्हारा क्या बिगाड़ेंगे? तुम निश्चिंत रहो, वे कुछ नहीं कहेंगे।''

''आप बात नहीं समझ रहे है।'' विचित्र इस बार झल्लाते हुए बोला– ''मंच के ठीक सामने दुःखहरण प्यारे को साथ लिये मेरे पिताजी बैठे हुए हैं। उनके सामने मैं अपना अभिनय ठीक से नहीं कर सकता। इसीलिए मैं मंच पर जाना नहीं चाहता।''

पूरी बात सुनने के बाद निदेशक महोदय स्थिति समझ पाये। विचित्र अपने पिताजी के सामने अभिनय करने के लिए किसी तरह तैयार नहीं था। अन्त में यह तय किया गया कि उसके पिताजी को किसी तरह नाटक के पूरे माहौल से दूर हटा दिया जाये। उन्हें घर भेज दिया जाये।

गाँव में वर्ष में एक बार नाटक होता था। बेचारे रामसिंह बड़े ही चाव से नाटक देखने आये हुए थे। बिना नाटक देखे वहाँ से चले जाने के लिये उनसे कहना आसान काम नहीं था। गाँव के बिरिजा मिहिर से उनकी अच्छी बनती थी। यह तय हुआ कि बिरिजा मिहिर से ही यह काम हो सकता है। तुरन्त बिरिजा मिहिर की खोज शुरू हो गयी। दर्शकों के बीच वे कहीं दिखाई नहीं दे रहे थे। एक आदमी को मिहिर जी के घर भेजा गया। वहाँ पता चला कि वे नाटक देखने आये हुए हैं।

मिहिर जी की खोज पूरे जोर–शोर से हो रही थी। तभी वे अचानक वहाँ पहुँच गये। निदेशक ने मिहिर जी को एकांत में ले जाकर पूरी बात बतायी और कहा– ''यदि पुरुष–पात्र का रोल रहता तो किसी को तैयार भी कर लिया जाता। लेकिन अब पर्दा उठने वाला है। ऐसे में दूसरे स्त्री–पात्र की व्यवस्था कर पाना सम्भव नहीं हो पायेगा ?''

निदेशक तथा कार्यक्रम के अन्य व्यवस्थापकों के कहने पर मिहिर जी तैयार हो गये। उन्होंने मंच के पास बैठे रामसिंह को दूर से ही पुकारा। रामसिंह उठकर मिहिर जी के पास चले आये, ''का हो मिहिर ? का बात है ?''

''आव, आव! तहरे के खोजत रहनी ह।'' मिहिर जी ने कहना शुरू किया– ''अरे मरदे, बुढ़ारी में का ई नाटक–वाटक देखब? ई त बचवन सब के खेल हवे। जा ओने, घर में जा के आराम कर।''

रामसिंह ने मिहिर जी की बात को गहराई से नहीं लिया। उन्होंने सोचा कि मिहिर जी यों ही बोल रहे हैं। लेकिन मिहिर जी ने जब फिर अपनी बात दुहराई तो रामसिंह को शंका हो गयी। वे समझ गये कि जरूर दाल में कुछ काला है। मिहिर जी ने रामसिंह को फिर कहा कि वे घर में जाकर आराम करें। इस पर रामसिंह अड़ गये। वे बिना नाटक देखे जाने के लिये तैयार नहीं थे। मिहिर जी को भी नाटक देखने के लिये बैठाने लगे।

बेचारे मिहिर जी की युक्ति असफल हो गयी थी। निकट में ही कुछ और कार्यकर्ता खड़े थे। वे भी रामसिंह को वहाँ से हट जाने के लिये आग्रह करने लगे। लेकिन वे नहीं हटने के लिए अड़ गये थे।

लोग समझ गये कि रामसिंह को वहाँ से हटा पाना सम्भव नहीं है। तब मिहिर जी ने उन्हें सही बात बता दी। पूरी बात सुन कर रामसिंह आपे से बाहर हो गये। उनका पूरा गुस्सा अपने बेटे विचित्र पर

था– ''उसकी यह मजाल ! वह हमारी नाक कटवाने पर तुला हुआ है।'' वहाँ उपस्थित लोग समझ गये कि आज विचित्र की हड्डी–पसली टूटे बिना नहीं रहेगी। लोग धीरे–धीरे स्टेज की ओर खिसकने लगे। स्त्री–पात्र की कमी कैसे पूरी होगी? लोग इसी सोच में डूबे हुए थे।

रामसिंह अपनी मोटी और ऊँची लाठी खट्ट–खट्ट पटकते हुए ग्रीन रूम में पहुँच गये। सामने ही विचित्र मिल गया। रामसिंह गुस्सा में उससे बोलने लगे– ''तेरी यह मजाल! तू हमारी नाक कटवाने पर तुला हुआ है। सुना है, तुम्हें स्त्री का रोल करने में शर्म आ रही है?'' वे डाँट कर बोले– ''यदि नाटक में तेरा रोल थोड़ा भी गड़बड़ाया तो तेरी हड्डी–पसली एक कर देंगे।''

रामसिंह का अन्तिम वाक्य सुनकर सब के चेहरे का रंग बदल गया। उनके चेहरे पर खुशी व्याप्त हो गयी। रामसिंह अब भी बोले जा रहे थे– ''शर्म लगती है? वह भी अपने बाप से? नाटक आखिर नाटक है। नाटक में विभिन्न तरह का रोल करना पड़ता है। इसीलिए तो इसका नाम नाटक है। इसमें शर्म कैसी?''

विचित्र मेकअप में पहले से तैयार था। पिताजी के मंच पर आ जाने से उसके दिल का भय समाप्त हो गया। रामसिंह उल्टे विचित्र को गौर करके देखने लगे। मेकअप में जो कमी रह गयी थी, उसे उन्होंने खोज–खोज कर अपने हाथों पूरा किया। रामसिंह ने विचित्र का ऐसा मेकअप किया कि वह पूर्ण रूप से लड़की दिखने लगा। अब उसकी हिम्मत दूनी हो गयी थी। उसका भय तो कब का समाप्त हो चुका था। नाटक हुआ और उसने स्त्री का अभिनय बखूबी निभाया। उसके रोल की सभी ने खुलकर सराहना की ही, रामसिंह के रोल की भी सराहना हुए बिना नहीं रह पायी।

अंकुश्री
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

दिमागी कसरत

इस रोचक कहानी में 20 रिक्त स्थान है जिनमें आपको चार अक्षर के बिना मात्रा वाले उपयुक्त शब्दों से पूर्ति करना है। ध्यान रहे एक शब्द का प्रयोग एक बार ही करना है।

शिवरात्रि के .... पर हम .... के समीप स्थित ....महादेव के दर्शन के लिए रवाना हुए। रास्ते में हम एक .... के वृक्ष की छाया में रुके। वहाँ हमने ठंडा .... पिया। तभी हमारे ड्राइवर .... को उस विशाल वृक्ष की एक डाल पर बड़ा सा .... लिपटा हुआ दिखाई दिया। सब .... के मारे .... भागे। हम .... गाड़ी में बैठे और रवाना हुए।

यह मन्दिर एक पहाड़ी पर था। हम .... ऊपर पहुँचे तो .... चूर हो गए। मन्दिर के ऊपर .... लहरा रहा था। मन्दिर में पार्वती व .. .. की मूर्ति के भी दर्शन किए। वहाँ आसपास का दृश्य .... था। मन्दिर के पास पेड़ व फूल की झाड़ियों से एक .... बना हुआ था।

कुछ देर वहाँ ठहर कर हम रवाना हुए और रास्ते में होटल .... पर रुके। वहाँ हमने ... . की दाल और .... की सब्जी के साथ रोटी खाई। इस प्रकार हम रात को 9 .... 30 मिनट पर घर लौटे।

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

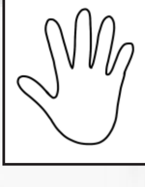

हमारी सभी अँगुलियाँ लम्बाई में बराबर नहीं होती है किन्तु जब वे मुड़ती है तो बराबर दिखाती है। इसी प्रकार यदि हम किन्हीं परिस्थितियों में थोड़ा सा झुक जाते हैं या तालमेल बिठा लेते हैं तो जिन्दगी बहुत ही आसान व आनन्दमय हो जाती है।

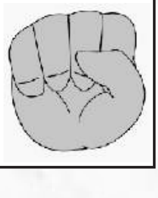

आओ! नए संकल्प के साथ

नीचे दिए संकल्पों में से, या अपनी इच्छा अनुसार कोई दूसरे, कम से कम 5 संकल्प चुनिए और नए वर्ष में पूरी ईमानदारी से उन्हें निभाइए। इससे आपके मन को तो खुशी मिलेगी ही, आप स्वयं को जैसा बनाना चाहते हैं, आप उस ओर कुछ कदम आगे बढ़ सकेंगे।

- ❐ स्कूल में पढ़ाई और अन्य गतिविधियों में भी अच्छा स्थान बनाना।
- ❐ प्रतिदिन कम से कम 2 से 3 घंटा स्वयं पढ़ना।
- ❐ किसी पशु–पक्षी को नहीं सताना।
- ❐ किसी की बुराई न करना।
- ❐ किसी का मजाक न उड़ाना।
- ❐ एक नया मैदानी खेल सीखना व नियमित खेलना।
- ❐ कमरे से बाहर निकलते समय पंखा, लाईट, टी.वी. आदि बन्द करना।
- ❐ सभी प्रकार के नशे से दूर रहना।
- ❐ खाना जूठा न छोड़ना।
- ❐ सुबह जल्दी उठना।
- ❐ रात को सोने से पहले दाँत साफ करना।
- ❐ संगीत, नृत्य या चित्रकला का अभ्यास करना।
- ❐ फास्ट फूड महीने में एक या दो बार से अधिक न खाना।

नाम – ....

जन्म दिन – ....

कैसा रहा वर्ष 2021 – ....

सबसे बड़ी सीख – ....

सबसे बड़ी कठिनाई – ....

सबसे यादगार घटना – ....

सबसे बड़ी सफलता – ....

सबसे बड़ी असफलता – ....

नए वर्ष का स्वागत करें

- ❒ दिन भर में 2 घंटे से ज्यादा टीवी न देखना।
- ❒ कम्प्यूटर या मोबाइल पर हिंसक गेम्स नहीं खेलना।
- ❒ एक वाद्ययंत्र बजाना सीखना।
- ❒ यथासंभव प्रतिदिन प्राणायाम, योग व व्यायाम करना।
- ❒ कोई काम अपने माता–पिता से छुपा कर नहीं करना।
- ❒ घर की सफाई में मदद करना।
- ❒ कचरा कूड़े–दान में ही फेंकना।
- ❒ दिनभर में 6 से 8 गिलास पानी पीना।
- ❒ सहपाठियों के साथ दोस्ताना व्यवहार रखना।
- ❒ अपने सामान को व्यवस्थित व साफ–सुथरा रखना।
- ❒ गलती स्वीकार करना, छुपाने के लिए झूठ नहीं बोलना।
- ❒ एक जरूरतमन्द बच्चे को दोस्त बनाना व उसके दु:ख–सुख में साथ निभाना।
- ❒ ....

....

वर्ष 2022 के संकल्प

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

आप इस रेखांकित बॉक्स को भरें और उसका एक फोटो लेकर हमें मोबाइल 9414343100 या 9351552651 के व्हाट्सएप पर भेजें।

घड़ी का क्रमिक विकास

500—1300 ई.पू. — पहली बार मिस्र में सूर्य घड़ी 1300 ई. का उपयोग किया गया।

400 ई.पू. — ग्रीक के लोग समय का पता पानी की घड़ी से लगाते थे।

980 ई. — महान राजा एल्फ्रेड जलती हुई मोमबत्ती डसे समय का निर्धारण करते थे।

1583 ई. — गैलीलियो ने महसूस किया कि पेंडुलम के हिलने की आवृत्ति उसकी लम्बाई पर निर्भर करती है।

1657 — क्रिस्टिएन हाइगंस ने पहली पेन्डुलम घड़ी बनाई।

1838 — लुइस आडीमार्स ने पेंचदार घड़ी और उसकी यांत्रिकी की खोज की।

1868 — पैटेक फिलिपी ने किया पहली रिस्टवॉच का आविष्कार

1888 — कार्टियार ने पहली लेडिज रिस्टवॉच बनाई।

1902 — पहली ओमेगा रिस्टवॉच बनी। इस दौरान जर्मनी में करीब 93000 हजार घड़ियाँ बिकी।

1914 — पहली अलार्म रिस्टवॉच का एटरना द्वारा आविष्कार।

1923 — पहली ऑटोमेटिक रिस्टवॉच का जान हार्डवुड द्वारा आविष्कार।

1925 — पैटेक फिलिपी ने पहली ऐसी रिस्टवॉच बनाई, जिसमें कैलेण्डर था।

1930 — महिलाओं के लिए सबसे छोटे आकार की घड़ियाँ बनी।

1945 — रोलेक्स डेट ने ऐसी पहली घड़ी बनाई, जिसमें तारीख थी।

1946 — आडीमार्स पिग्वेट ने दुनिया की सबसे पतली घड़ी बनाई।

1953 — लिप्स ने पहली बार बैटरी से चलने वाली घड़ी का निर्माण किया।

1957 — हैमिलटन ने पहली बार इलेक्ट्रॉनिक घड़ी का निर्माण किया।

दुनिया की सबसे पुरानी और अभी भी समय बताने वाली घड़ी इग्लैंड में है।

ऐसा माना जाता है कि यह घड़ी 1386 या उससे भी पहले बनाई गई थी। यह घड़ी लोहे की बनी हुई थी। शुरूआत में यह वर्ज ऐस्केपमैंट और फालियट बैलेंस से चलाई जाती थी। काफी समय बाद इसमें पेंडुलम का इस्तेमाल किया गया। इस घड़ी में काँटे नहीं है, यह सिर्फ हर घंटे में घंटा बजा देती है।

गोवर्द्धन यादव
उज्जैन (मध्यप्रदेश)

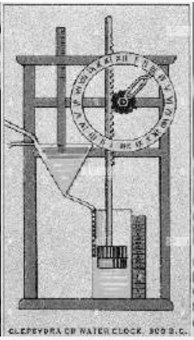

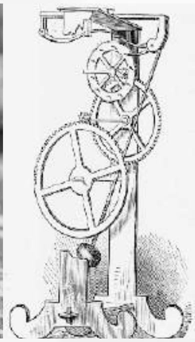

दस सवाल दस जवाब

(1) ऊपर दिये गये भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री को पहचानिये।

(2) भारत के किस प्रधानमन्त्री का देहान्त विदेश में हुआ?

(3) हमारे किस प्रधानमन्त्री का कार्यकाल सबसे अधिक रहा?

(4) दो बार भारत के कार्यवाहक प्रधानमन्त्री कौन बनें?

(5) भारत के कौनसे प्रधानमन्त्री के प्रति अविश्वास प्रस्ताव एक मत से पारित हुआ?

(6) भारत के प्रथम उप प्रधानमन्त्री कौन थे?

(7) सबसे कम उम्र में प्रधानमन्त्री बनने वाले कौन थे?

(8) किस प्रधानमन्त्री का जन्म भारत की आजादी के बाद हुआ?

(9) प्रथम गैर कांग्रेसी प्रधानमन्त्री कौन थे?

(10) किस प्रधानमन्त्री के कार्यकाल में बांग्ला देश बना?

उत्तर इसी अंक में

- महिला– डॉक्टर साहब पिछले वर्ष मुझे निमोनिया हो गया था, तब आपने नहाने के लिए मना किया था।

  डॉक्टर– अब क्या हुआ है?

  महिला– अब मैं यह पूछने आई हूँ कि क्या अब मैं नहा लूँ?

- पड़ोसिन – क्यों बहन, मुन्ने को 'हैवीवेट चेम्पियन' बनाने का इरादा है क्या?

  दूसरी– नहीं बहन, इसे अपना बस्ता उठाने की आदत डाल रही हूँ।

प्रेरक वचन

एक सच्चे सैनिक को सैन्य प्रशिक्षण और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दोनों की जरूरत होती है।

❖

राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों– सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् से प्रेरित है।

❖

अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना सबसे बड़ा अपराध है।

❖

माँ का प्यार स्वार्थ रहित और सबसे गहरा होता है। इसको किसी भी प्रकार नापा नहीं जा सकता।

❖

अजेय (कभी न मरने वाले) हैं वो सैनिक जो हमेशा अपने राष्ट्र के प्रति वफादार रहते हैं और हमेशा अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार रहते हैं।

❖

इतिहास गवाह है की कोई भी वास्तविक परिवर्तन चर्चाओं से कभी नहीं हुआ।।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

चलें बाग में

टीवी को हम,
छोड़ें जी!

इसने घर में
बन्द कर दिया,
खेल–कूद से
दूर कर दिया।
इससे नाता,
तोड़ें जी! ...

चलें बाग में
खिले फूल हैं,
भौंरे उन पर
रहे झूल हैं।
इन्हें साथ में,
जोड़ें जी! ...

पापा से,जी
भर बतियाएँ,
मम्मी का भी
हाथ बँटाएँ।
जीवन का रुख
मोड़ें जी! ...

रमेशचन्द्र पंत
द्वाराहाट, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

राजा को सबक

एक बार विराट नगर के राजा चन्द्रभान ने राज्य के लोगों में भूमि का वितरण किया। उसने किसानों, मजदूरों और कारीगरों को भूमि कम दी और उच्च वर्ग को अधिक भूमि दी। इस पर लोगों ने सवाल उठाया कि ऐसा क्यों? राजा ने स्पष्ट किया कि उच्च वर्ग अन्य लोगों से अधिक ज्ञानी और बुद्धिमान होता हैं, इसलिए उन्हें अधिक भूमि देना ठीक है।

अपनी बारी आने की प्रतीक्षा में खड़े एक लोहार और भिश्ती (पानी पिलाने वाला) इस भेदभाव से चिढ़ गए। दोनों मित्र थे। उन्होंने आपस में सलाह कर राजा को सबक सिखाने की सोची। जब लोहार का नंबर आया तो राजा ने उससे पूछा– ''तुम्हारा काम कितनी भूमि से चल जाएगा?'' लोहार बोला– ''महाराज हथौड़े और कान के मध्य जितना अन्तर है, बस उतनी भूमि ही काफी है।'' यह बात राजा को समझ नहीं आई। यद्यपि उसने सोचा इसे अपना काम करने को 2–4 गज जमीन पर्याप्त हैं।

राजा ने फिर भिश्ती से पूछा– ''तुम कितनी भूमि लोगे?'' भिश्ती ने कहा– ''महाराज एक मशक (चमड़े का बना पानी का पात्र) भर पानी जितनी जगह में आसानी से समा जाए, बस उतनी भूमि मेरे लिए पर्याप्त होगी।'' राजा को समझ आया कि इसे भी 4–6 गज जमीन ही चाहिए। राजा ने अपने दो कर्मचारी उन दोनों के साथ भेजे और कहा– ''इन्हें जमीन नाप दो।''

लेकिन जब कर्मचारी लोहार के लिए जमीन नापने लगे तो लोहार ने कहा– ''मेरे हथौड़े की आवाज कान तक आसानी से जहाँ तक सुनाई दे, वहाँ तक जमीन चाहिए।'' और भिश्ती बोला– ''मेरी एक मशक का पानी जहाँ तक छिड़क सकूँ, वहाँ तक जमीन चाहिए।'' यह सुनकर कर्मचारी चकरा गए। वे उन दोनों को लेकर राजा के पास पहुँचे। उन्होंने राजा को कहा कि– ''महाराज, यह दोनों तो काफी अधिक भूमि माँग रहे हैं, आप उन्हें समझाइए।''

राजा बोले– ''क्यों भाई? तुम तो बहुत कम भूमि चाहते थे। अब इनको क्यों परेशान कर रहे हो? इसकी सजा जानते हो।'' ''जी महाराज!'' दोनों ने एक साथ कहा। फिर लोहार बोला– ''महाराज, मैंने तो उतनी ही भूमि माँगी है, जैसा आपको बताया था कि हथौड़े और कान के मध्य जितनी दूरी है। ये हमारी बात समझ ही नहीं रहे। आप बताएँ क्या मेरी

माँग अनुचित है?'' राजा इस पर खुद चकराए।

फिर भिश्ती बोला' ''महाराज, मैंने तो आपसे कहा था कि एक मशक भर पानी जितनी भूमि में आसानी से समा जाए उतनी भूमि चाहिए। मैं भूमि पर एक मशक पानी छिड़कने लगा तो कर्मचारी बोले, सभी पानी एक जगह उड़ेल दो। महाराज आप बताएँ, क्या एक जगह पानी उड़ेल देने से पानी आसानी से जमीन में समा सकेगा।'' राजा लोहार और भिश्ती की बुद्धिमान से चकित थे।

अब उन्हें कोई रास्ता न सूझा। अतएव दोनों की इच्छानुसार भूमि नाप कर देने के आदेश दिए। साथ ही कहा– ''आप दोनों की बुद्धिमानी से मैं हैरान हूँ। आप तो उच्च वर्ग से भी ज्यादा बुद्धिमान हो।'' यह कहते हुए उन्हें भूमि के साथ ही दस–दस स्वर्ण मुद्राएँ देने के आदेश दिए।

तब दोनों मित्र बोले– ''नहीं महाराज! क्षमा करें, हमें न तो इनाम चाहिए और न ही अधिक भूमि, हम तो आपको यह बताने का प्रयास कर रहे थे कि बुद्धिमान केवल उच्च वर्ग ही नहीं होते, सभी वर्गों में बुद्धिमता होती हैं। आपने उच्च वर्ग को अधिक भूमि दी जो स्वयं कृषि नहीं करते और जो कृषि करते हैं और मेहनती कृषक हैं, उन्हें भूमि कम दी जो राज्य को खुशहाल बनाते हैं।''

लोहार और भिश्ती के तर्क सुनकर राजा चकरा गया। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ और बोला– ''मैं उच्च वर्ग को ही बुद्धिमान मानता था। तुमने मुझे यह ज्ञान करवा दिया कि बुद्धिमानी किसी वर्ग की बपौती नहीं है। मुझे क्षमा करना, मैं वचन देता हूँ कि आज के बाद मैं किसी से किसी तरह का पक्षपात नहीं करूँगा और आगे राजकाज के लिए संचालन में भी तुम दोनों से परामर्श लेता रहूँगा।''

डॉ रामसिंह यादव
उज्जैन (मध्यप्रदेश)

प्रेरक प्रसंग

यहाँ सब समान है

पंडित मदन मोहन मालवीय ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय बनवाने के लिए पूरे भारत में घूम–घूमकर राजा–महाराजाओं, सेठ–साहूकारों और अन्य दानी लोगों से करोड़ों रुपए एकत्रित किए। फिर तत्कालीन भारत के अँग्रेज गवर्नर जनरल लॉर्ड हार्डिंग्ज द्वारा उसका शिलान्यास सन 1916 में करवाया। विश्वविद्यालय का भवन 3 वर्षों में बन जाने के बाद सन् 1919 में पढ़ाई आरम्भ हुई और मालवीय जी विश्वविद्यालय के उप कुलपति बने।

एक बार मालवीय जी बिहार प्रान्त में गए हुए थे, वहाँ कुछ लोगों ने उन्हें बताया कि यहाँ के एक गाँव में अछूत जाति का एक होनहार लड़का पढ़ाई में बहुत अच्छा है, यदि उसकी पढ़ाई बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हो सके तो वह बहुत उन्नति करेगा। मालवीय जी उस लड़के को अपने साथ ले गए और विश्वविद्यालय में प्रवेश करा दिया। उस लड़के का नाम जगजीवन राम था।

एक दिन मालवीय जी को पता चला कि विद्यार्थियों के जूठे बर्तन माँजने वाला व्यक्ति जगजीवन राम के जूठे बर्तन इसलिए साफ नहीं करता कि क्योंकि वह अछूत जाति का है और जगजीवन राम को स्वयं ही अपने बर्तन साफ करने पड़ते हैं। उसी दिन जगजीवन राम के भोजन करने के बाद मालवीय जी वहाँ पहुँचे और उससे जूठे बर्तन लेकर स्वयं माँजने लगे। यह देखकर बर्तन साफ करने वाला व्यक्ति बहुत लज्जित हुआ और उसने मालवीय जी से क्षमा माँग कर उनसे जगजीवन राम के जूठे बर्तन लिए और उन्हें साफ करने लगा। उस व्यक्ति को मालवीय जी की यह बात समझ में आ गई कि यहाँ सभी विद्यार्थी समान है।

वही जगजीवन राम आगे उन्नति करते हुए बाबू जगजीवन राम कहलाए और भारत सरकार के कई मंत्रालयों में मन्त्री एवं उप प्रधान मन्त्री बनकर जनता की सेवा करते रहें।

मोहन उपाध्याय
अजमेर (राजस्थान)

व्हाट्सएप कहानी

प्रवीण भारती पेशे से अध्यापक थे। कस्बे से उनके विद्यालय की दूरी 7 किलोमीटर थी। एकदम वीराने में था उनका विद्यालय। कस्बे से वहाँ तक पहुँचने का साधन यदा कदा ही मिलता था, तो अकसर लिफ्ट माँगकर ही काम चलाना पड़ता था और न मिले तो प्रभु के दिये दो पैर, भला किस दिन काम आएँगे। ''कैसे निपट वीराने में विद्यालय खोल दिया है सरकार ने?'' लिफ्ट माँगते, साधन तलाशते प्रवीण जी रोज यही सोचा करते।

धीरे–धीरे कुछ पूंजी इकट्ठा कर, उन्होंने एक नया स्कूटर ले लिया। स्कूटर लेने के साथ ही उन्होंने एक प्रण लिया कि वे कभी किसी को लिफ्ट के लिए मना न करेंगे। आखिर वे जानते थे जब कोई लिफ्ट को मना करे तो कितनी शर्मिंदगी महसूस होती है। अब प्रवीण जी रोज अपने चमचमाते स्कूटर से विद्यालय जाते, और रोज कोई न कोई उनके साथ जाता। लौटते में भी कोई न कोई मिल ही जाता।

एक रोज लौटते वक्त एक व्यक्ति परेशान सा लिफ्ट के लिए हाथ फैलाये था। अपनी आदत अनुसार प्रवीण ने स्कूटर रोक दिया। वह व्यक्ति पीछे बैठ गया। थोड़ा आगे चलते ही उस व्यक्ति ने छुरा निकाल प्रवीण की पीठ पर लगा दिया। ''जितना रुपया है वो और ये स्कूटर मेरे हवाले करो।'' व्यक्ति बोला। प्रवीण की सिट्टी पिट्टी गुम, डर के मारे स्कूटर रोक दिया। पैसे तो पास में ज्यादा थे नहीं, पर प्राणों से प्यारा, पाई–पाई जोड़ कर खरीदा स्कूटर तो था।

''एक निवेदन है।'' स्कूटर की चाबी देते हुए प्रवीण बोले। ''क्या?'' वह व्यक्ति बोला। ''यह कि तुम कभी किसी को ये मत बताना कि ये स्कूटर तुमने कहाँ से और कैसे चोरी किया? विश्वास मानो मैं भी रपट नहीं लिखाऊँगा।'' प्रवीण बोले।

''क्यों?'' व्यक्ति हैरानी से बोला। ''यह रास्ता बहुत वीरान है। सवारी मिलती नहीं, उस पर ऐसे हादसे सुन आदमी लिफ्ट देना भी छोड़ देगा।'' प्रवीण बोला। व्यक्ति का दिल पसीजा, उसे प्रवीण भले मानुष प्रतीत हुए, पर पेट तो पेट होता है। ''ठीक है'', कहकर वह व्यक्ति स्कूटर ले उड़ा।

अगले दिन प्रवीण सुबह–सुबह अखबार उठाने दरवाजे पर आए, दरवाजा खोला तो स्कूटर सामने खड़ा था। प्रवीण की खुशी का ठिकाना न रहा, दौड़कर गए और अपने स्कूटर को बच्चे की तरह प्यार करने लगे। देखा तो उसमें एक कागज भी लगा था। ''मास्साब, यह मत समझना कि तुम्हारी बातें सुन मेरा हृदय पिघल गया। कल मैं तुमसे स्कूटर लूट उसे कस्बे ले गया, सोचा भंगार वाले के पास बेच दूँ। ''अरे ये तो मास्साब का स्कूटर है।'' मैं कुछ कहता इससे पहले भंगार वाला बोला– ''अरे, मास्साब ने मुझे बाजार कुछ काम से भेजा है।'' कहकर मैं बाल–बाल बचा। परन्तु शायद उस व्यक्ति को मुझ पर शक सा हो गया था।

फिर मैं एक हलवाई की दुकान पर गया, जोरदार भूख लगी थी तो कुछ सामान ले लिया। ''अरे ये तो मास्साब का स्कूटर है।'' वह हलवाई भी बोल पड़ा। ''हाँ, उन्हीं के लिए तो ये सामान ले रहा हूँ, घर में कुछ मेहमान आये हुए हैं।'' कहकर मैं जैसे तैसे वहाँ से भी बचा।

फिर मैंने सोचा कस्बे से बाहर जाकर कहीं इसे बेचता हूँ। शहर के नाके पर एक पुलिस वाले ने मुझे पकड़ लिया। ''कहाँ, जा रहे हो? और ये मास्साब का स्कूटर तुम्हारे पास कैसे?'' वह मुझ पर गुर्राया। किसी तरह उससे भी बहाना बनाया। मास्साब, तुम्हारा यह स्कूटर है या अमिताभ बच्चन या प्रधानमन्त्री। सब इसे पहचानते हैं। आपकी अमानत मैं आपके हवाले कर रहा हूँ, इसे बेचने की न मुझ में शक्ति बची है, न हौसला। आपको जो तकलीफ हुई उस एवज में स्कूटर का टैंक फुल करा दिया है।'' पत्र पढ़ प्रवीण जी मुस्कुरा दिए और बोले– ''कर भला तो हो भला। यह कहावत आज भी सत्य है।''

खरा उतरना है

नए वर्ष के लक्ष्य नये हैं
इन पर खरा उतरना है।
थक कर बैठ नहीं जाना है
बाधाओं से लड़ना है।।

बीता समय न फिर से आता
यही समय का कहना है।
अँधियारी से लोहा लेने
नव–प्रभात सा उगना है।।

सूखी धरती तरस रही है
नदियाँ सा अब बहना है।
पतझड़ नहीं हमें हैं प्यारा
सब कलियों को खिलना है।।

प्रतियोगी हैं सबको बनना
नया कथानक लिखना है।
काँटों में खिलते गुलाब–सा
सदा हमें तो बनना है।।

राजेन्द्र निशेष
चंडीगढ़

नए साल का जादू

नए साल का जादू छाया,
खुशियों वाला मौसम आया।
शीतलहर के चले तराने,
धूप देख के मन इठलाया।

चाट चटपटे, गर्म समोसे
देख सभी का मन ललचाया।
कुछ तो चले मनाली कुल्लू,
किसी को गोवा, सागर भाया।

नए साल में होगी मस्ती,
नाचे–कूदे, शोर मचाया।
नव उमंग उत्साह जोश से,
नए साल का जादू छाया।

महेन्द्र कुमार वर्मा
पूणे (महाराष्ट्र)

नये वर्ष में

स्नेह–एकता–समरसता का
अविरल दीप जलें,
भय फैला आतंकवाद का
होता दूर चले।

भूख प्यास से दुःखी न कोई
अब धरती पर हो,
खुशहाली की नई रोशनी
फैली घर–घर हो।

आशा की स्वर्णिम किरणें
रवि लेकर निकलें,
तिमिर निराशा व संशय का
मन से शीघ्र ढले।

पक्षी चहकें, दिशा–दिशा में
हरियाली लहके,
बहे हवा सर्वत्र सुगन्धित
घर–आँगन महके।

नये वर्ष में वर्ण–वर्ण के
कोमल फूल खिलें,
नहीं विषमता रहे परस्पर
प्राणी गले मिलें।

डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'
चम्पावत (उत्तराखंड)

बिट्टू बदल गया

एक गाँव में बड़का नाम का आदमी रहता था। वह पढ़ा लिखा बिलकुल नहीं था। इसके बाद भी सभी गाँव वाले उसकी बुद्धि का लोहा मानते थे। खेती से ही पूरे परिवार का पेट चलता था। प्राकृतिक विपदा से आटा गीला होने के दिनों में 'धीरज धरे सो पार' की उक्ति याद कर हताश नहीं होता था।

उसका एक ही बेटा था जिसे वह बिट्टू ही कहता था। वह गाँव में स्कूल खुल जाने से रोज पढ़ने जाया करता था। बड़का हमेशा मन में सोचता था कि उसकी इकलौती सन्तान खूब पढ़–लिखकर अपना भविष्य बनाए। किन्तु बिट्टू डरपोक स्वभाव का था। सब लड़कों से कद–काठी में काफी छोटा था। इस कारण हीनभावना ज्यादा थी।

नन्हा बिट्टू अपनी कक्षा में सबसे पीछे लुक छिपकर बैठता था। शिक्षक से आँखें मिलाते ही पानी जैसा काँपने लगता था। ''कहीं कुछ पूछ लिया और मुझसे सही उत्तर नहीं बना तो बड़ी किर–किरी हो जाएगी।'' ऐसा सोचकर भीगी बिल्ली सा सहमा रहता था। स्कूल उसके लिए सिरदर्द से कम नहीं था।

''परीक्षा में अगर फेल हो गया तो सब मेरी हँसी उड़ाएँगे।'' इस प्रकार की कायरता के सामने उसे लाचार रहना पड़ता था। बड़का को इस बारे में जानकारी थी। बीच–बीच में उसे समझाता भी था, लेकिन सब कुछ सिर के ऊपर से निकल जाता था। लाड़ला बेटा औंधा घड़ा सा लग रहा था फिर भी यह मानता था कि कोशिश जारी रहे तो हार को जीत में बदलना टेढ़ी खीर नहीं है।

रविवार छुट्टी का दिन था। मौका पाते ही बड़का ने अपने बिट्टू को गोद में बैठाकर मुस्कराते हुए कहा– ''तू मेरी आँखों का तारा है। विद्या ही अनमोल रतन है। मन लगाकर पढ़ने से आगे बढ़ने और भविष्य गढ़ने के अवसर मिलते हैं। डरपोक आदमी ताल ठोककर भला कैसे लड़ेंगे। जो डरता है, उसके लिए सफलता के दरवाजे बन्द रहते हैं और जो हौसला रखता है, उसके लिए पहाड़ सी कठिनाई राई के समान है। चिरैया के नन्हे पंख हौसले के दम पर आसमान में दूर तक उड़ान भरते हैं। मेहनत से ही खेत में सोना उपजता है। मैं तो अँगूठा छाप हूँ, मगर मैं सोचता हूँ कि अगर तू मन में ठान लेगा तो भय का भूत फुर्र हो जाएगा।''

पिता को भरोसा हुआ, क्योंकि बिट्टू सिर झुकाए ध्यान से सुनने की मुद्रा बनाए हुए था। असल

में उसकी मनोदशा जस की तस रही। बेचारे पिता की समझाइश का उस पर बूँद भर भी असर नहीं था। ''जब मेरे भाग्य में विद्या नहीं है, तब मैं क्या करूँ?'' इस हीनभावना से उसका पिंड छूटना एक सपना–सा लग रहा था।

वह स्कूल में सभी प्रतियोगिताओं को ऊँह कहकर टाल देता था। वह फिसड्डी रहने के भय से कबड्डी तक नहीं खेलता था। उधर बड़का नए–नए उपाय सोचने में योद्धा की तरह कमर कसे हुए था। अन्त में उसने यह मान लिया कि सीधी अँगुलियों से घी नहीं निकलता है। अब सूझ से ही सफलता मिल सकती है।

''बेटा कल रात में मुझे एक बढ़िया सपना आया है।'' यह सुनकर बिट्टू ने बड़ी उत्सुकता दिखाई– ''हाँ, पापा जल्दी सुनाओ। आपका सपना झूठा नहीं हो सकता है।'' गरम तवे पर रोटी सेंकने का अवसर हाथ लगते ही बड़कू ने बात को आगे बढ़ाया– ''घर के कुल देवता ने बताया कि मेरा बेटा आगे सूरज की तरह दमकेगा और चंदा की तरह चमकेगा। उसके भीतर आत्मविश्वास जागने भर की देर है। भयभीत को जीत कभी नहीं मिलती है। मुझे अपनी हर साँस से ज्यादा इस बात पर विश्वास है कि अगर तू चाह ले तो राह डंके की चोट पर मिलेगी। पढ़ाई से लेकर खेलकूद वगैरह के काम में भी अच्छा नाम कमा सकता है। मजबूत जड़ों वाले पेड़ फूलते फलते हैं बेटा! अब इसके आगे कुछ नहीं कहना चाहता।''

बिट्टू के चेहरे पर चमक की झलक देखकर बड़का ने मनचाही खुशी का अनुभव कर लिया। उधर बेटे को यह समझ थी कि अपने घर के पूज्य कुल देवता का सपना पत्थर की लकीर होता है।

अन्दर के बन्द कपाट खुलना शुरू होते ही उसमें अंकुर की तरह वह आत्मविश्वास फूटने लगा जिसके कारण उसका ध्यान पढ़ाई की ओर शुरू हो गया। इस बदलाव से हीनभाव का पुराना दोष तेजी से घटता हुआ देखकर कक्षा शिक्षक बहुत प्रसन्न हुए। हमेशा चूहे की तरह लड़कों के पीछे सिर झुकाकर बैठने के बदले वह सबसे आगे की कतार में बैठने लगा। उस बीमार को प्रेरणा का अनमोल अनार मिल चुका था। यह आभास होने पर उस अनपढ़ पिता की खुशी सावन की हरियाली के समान हो रही थी।

स्कूल की वार्षिक परीक्षाएँ समाप्त हो गई। इस बार पीछे से प्रथम आने वाला बिट्टू टेन टॉप में आया। अब वह कक्षा पाँचवीं में पहुँच गया था। ''वाह बेटे!'' कहकर बड़कू ने उसे अपनी बाँहों में भर लिया। एक छोटी सी घटना ने बिट्टू में बड़ा बदलाव कर दिया।

राजा चौरसिया
उमरियापान कटनी (मध्यप्रदेश)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

		5				8		
8	1	6			5	4	2	7
7		2	6				1	9
2					7	3		1
6	9		1		8	7		
3	7	1	5				4	
	6		9		2			
1		3		4		9	7	
5	8		7			2	6	4

उत्तर इसी अंक में

शुतुरमुर्ग

जिसका अंडा है सबसे बड़ा

न उड़ने वाले पक्षियों में शुतुरमुर्ग सबसे बड़ा है। यह न केवल आकार में ही अपितु वजन में भी सभी पक्षियों से ऊँचा तथा भारी है।

उत्तरी अफ्रीका का दीर्घकाय शुतुरमुर्ग एटलस पर्वत के दक्षिण में ऊपरी सेनेगल और नाइगर से लेकर सूडान और मध्य इथोपिया तक पाया जाता है। नर पक्षियों की ऊँचाई 2.74 मीटर तथा वजन 156 किलोग्राम होता है। मादा पक्षी का कद और वजन कम होता है।

अब से हजारों वर्ष पहले शुतुरमुर्ग ने अपने पंखों का प्रयोग करना बन्द कर दिया था। शायद उनकी जीवन स्थितियाँ ही ऐसी थी जिनमें पंखों की आवश्यकता नहीं थी। या तो वे ऐसे स्थानों पर रहते थे जहाँ उनका शिकार करने के लिए शत्रु नहीं थे या फिर वे मुसीबत से बचने के लिए अपनी टाँगों पर भरोसा कर सकते थे। इसका प्रभाव यह हुआ कि उनके पंख प्रयोग न होने के कारण उड़ने योग्य नहीं रह गए। अपने बड़े आकार और अधिक वजन की वजह से यह उड़ने में असमर्थ है यानी अपना शरीर हवा में उठा नहीं पाते।

शुतुरमुर्ग भले ही उड़ नहीं पाता हो, लेकिन 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकता है। इसका एक कदम 4.5 मीटर का होता है। दौड़ते समय उसके पंख सन्तुलन बनाए रखने में सहायता करते हैं। इसके पैर काफी सुन्दर होते हैं। वे काफी लम्बे होते हैं तथा उनमें दो–दो अँगुलियाँ ही होती है। नर के पंखों का रंग हरा–भूरा या काला होता है जबकि मादा के पंखों का रंग धुँधला होता है। शुतुरमुर्ग के पंख सुन्दर होते हैं। जब यह एक साल का हो जाता है तो इसके पंख आसानी से निकाले जा सकते हैं और उनके स्थान पर नए पंख निकल आते हैं। पंख उखाड़ने में इसे कोई नुकसान नहीं होता।

इनकी आवाज मधुर नहीं होती। मादा शुतुरमुर्ग रेत में माँद बनाकर उसमें अंडे देती है। दिन में मादा तथा रात में नर अंडों को सेने का काम करता है।

सभी जीवित पक्षियों में सबसे बड़ा अंडा शुतुरमुर्ग का होता है। इसके एक अंडे की औसत लम्बाई 6–8 इंच तथा वजन 1.65–1.78 किलोग्राम होता है। यह आयतन मुर्गी के दो दर्जन अंडों के बराबर होता है। हालाँकि इसका खोल मात्र 1.5 मिलीमीटर मोटा होता है, फिर भी यदि 125 किलोग्राम भार का कोई व्यक्ति इस पर खड़ा हो जाए तो वह टूटेगा नहीं।

शुतुरमुर्ग का भोजन पौधे, बीज आदि है लेकिन इन्हें पचाने के लिए वह पत्थर, लोहे के टुकड़े आदि भी निगल जाता है।

किरण बाला
मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

विश्व का सबसे प्राचीन खेल

पोलो

पोलो एक बहुत प्राचीन और अनोखा खेल है। इस खेल में खिलाड़ी के साथ–साथ घोड़ों की भी मुख्य भूमिका रहती है। इस खेल को देखने का एक अलग ही रोमांच है। वैसे अब तो हाथी और अन्य सवारियों के साथ भी यह खेल खेला जाने लगा है।

कहते हैं, ईसा से पाँच सौ वर्ष पहले पोलो का खेल ईरान में खेला जाता था। इस खेल की शुरुआत सेना में जवानों को घोड़ों पर काबू रखने का गुर सिखाने के लिए हुई। इस खेल में खिलाड़ी का अपने घोड़े पर जबरदस्त नियन्त्रण होना बहुत जरूरी है। यही नियन्त्रण युद्ध में या बादशाह की सुरक्षा के समय जवानों के काम आता था। ईरान से यह खेल फैला और एशिया में लोकप्रिय होता गया। तिब्बत में गेंद को पुलू कहते हैं। शायद उसी से प्रेरित होकर इस खेल को पोलो नाम दिया गया। वहीं से यह भारत में आया और यहाँ के राजा–महाराजाओं में यह खेल लोकप्रिय हुआ। सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु पोलो खेलते समय घोड़े से गिरकर ही हुई थी।

भारत के मणिपुर में यह खेल बहुत लोकप्रिय हुआ। वहाँ इसे सागोल कंग्जी कहा जाता है। मणिपुर का इंफाल पोलो ग्राउंड दुनिया का सबसे पुराना पोलो ग्राउंड माना जाता है। दुनिया का पहला पोलो क्लब असम के सिलचर में 1834 में स्थापित हुआ। अँग्रेजों ने अपने भारत प्रवास के दौरान इस खेल को सीखा और अपने साथ पश्चिम में ले गए। आधुनिक पोलो को इसीलिए इंग्लैंड की देन माना जाता है। वहाँ से यह खेल पूरे विश्व में लोकप्रिय हो गया।

कैसे खेलते हैं : पोलो का खेल दो तरह से खेला जाता है। एक तो खुले घास के मैदान में या फिर छोटी सी जगह में। बड़े मैदान में यह खेल खेलते समय प्रत्येक टीम में चार खिलाड़ी होते हैं। केवल पुरुष, केवल महिलाएँ या दोनों की मिली जुली टीम भी हो सकती है। ये खिलाड़ी घोड़ों पर बैठकर दाएँ हाथ में पकड़ी स्टिक से लकड़ी या प्लास्टिक की बॉल को लेकर आगे बढ़ते हैं और विपक्षी के गोल में बॉल को डालते हैं। ज्यादा गोल करने वाली टीम इसमें विजेता होती है। खेल के बीच में खिलाड़ी अपने घोड़े बदल सकते हैं, ताकि घोड़ा ज्यादा नहीं थके। इस खेल में बाएँ हाथ से खिलाड़ी नहीं खेल सकता। केवल दाएँ हाथ से खेलने की इजाजत है। ताकि टकराने की नौबत न आए। खेल को नियन्त्रित करने के लिए दो अंपायर भी घोड़ों पर सवार होते हैं। दूसरे खेल में जब छोटे मैदान पर पोलो खेला जाता है तो एक टीम में केवल तीन खिलाड़ी होते हैं।

पोलो और ओलम्पिक : 1900 के पेरिस ओलम्पिक में यह शामिल रहा और 1936 के बर्लिन ओलम्पिक तक यह ओलम्पिक का हिस्सा रहा। पर बाद में इसे हटा दिया गया। जिससे खेल का आकर्षण कुछ कम हो गया था। इस खेल को फिर से लोगों के बीच स्थापित करने के लिए अर्जेंटीना के पोलो एसोसिएशन के प्रमुख मार्कोस उरांडा ने एक संस्था बनाने का सुझाव दिया जो इस खेल को नियन्त्रित करे। उन्हीं के प्रयासों से 1982 में फेडरेशन ऑफ इंटरनेशनल पोलो की स्थापना हुई।

पोलो विश्व कप : उरांडा ने अध्यक्ष बनते ही इस खेल का विश्व कप कराने का प्रयास किया। उन्हीं के प्रयासों से 1987 में ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना) में पोलो का पहला विश्व कप आयोजित हुआ। तब पहली बार चौंपियन बनने का गौरव अर्जेंटीना को मिला।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

मुझे सफाई नहीं पसन्द है

रमन के स्कूल में आज महीप सर आये थे। स्कूल के सभी बच्चों को प्रार्थना कक्ष में एकत्र किया गया। प्रधानाचार्या, सिन्हा मैडम ने कहा– ''बच्चो, आज महीप सर आये हैं, वह तुम लोगों को सफाई के बारे में बताएँगे।'' रमन के दोस्त चन्दन ने धीरे से कहा– ''सफाई के लिए तो मेरी मम्मी रोज ही मुझे डाँटती हैं, अब यह सर भी बोर करेंगे।'' रमन बोला– ''सही कह रहे हो, मेरी तो मम्मी से रोज लड़ाई होती है, पता नहीं यह बड़े लोग सफाई के पीछे क्यों पड़े रहते हैं?''

महीप सर ने कहना शुरू किया– ''बच्चो'' तो कक्ष में हो रही खुसर–पुसर शान्त हो गयी। महीप सर ने कहा– ''बच्चो, आज मैं सफाई के बारे में बात करने आया हूँ। पहले यह बताओ कि किसको–किसको सफाई से चिढ़ है?'' यह सुन कर सारे बच्चे चुप होकर एक दूसरे को देखने लगे। सर बोले– ''मुझे तो सफाई करना बिलकुल पसन्द नहीं है। क्या हर समय सफाई–सफाई, अरे मजे से जो मन हो, जहाँ मन हो फेंक दो और मौज करो।''

यह सुनकर बच्चों को मजा आ गया, सब ताली बजाकर हँसने लगे। कुछ बच्चे जोश में बोले– ''मुझे भी सफाई नहीं पसन्द।'' रमन ने कहा– ''अरे वाह! यह सर तो हम लोगों जैसे हैं। हम तो सोचते थे, मम्मी की तरह यह भी सफाई के बारे में बता कर बोर करेंगे।'' रमन सबसे जोर से बोला– ''मुझे भी सफाई बिलकुल पसन्द नहीं है।'' महीप सर ने रमन की ओर देखा फिर मुस्कुरा कर कहा– ''चलो, हम सब मिलकर आज से ही सफाई छोड़ दें। क्यों रमन, क्या कहते हो?'' जो बच्चे सफाई पसन्द नहीं करते थे, एक साथ चिल्लाये– ''हाँ, हम सफाई नहीं करेंगे।'' महीप सर ने कहा– ''तो तय रहा, अब हम लोग कुछ दिनों बाद फिर मिलेंगे।''

अगले दिन बच्चे अपनी–अपनी कक्षा में गये। रमन ने देखा कक्षा में उसकी सीट के पास, जमीन पर एक दिन पहले की गन्दगी पड़ी थी। वह जाकर अपनी सीट पर बैठ गया, जब वह उठ कर अपनी कॉपी मैडम को दिखाने गया तो सारे बच्चे हँसने लगे। रमन को कुछ समझ न आया, तब उसके दोस्त चन्दन ने कहा– ''तुम्हारे नेकर में पीछे कुछ लगा है, जैसे तुमने पॉटी कर दी हो।'' रमन अपनी सीट पर गया तो वहाँ कुछ गिरा था।

उसे याद आया कि कल उसी के टिफिन से सब्जी गिर गयी थी। कल रोहित स्कूल नहीं आया था अतः वह पास वाली सीट पर बैठ गया था। रमन को गुस्सा आ गया, उसने मैडम से कहा– ''मैडम आज सफाई वाले अंकल ने मेरी सीट की सफाई नहीं की, देखिये मेरी नेकर गन्दी हो गयी।'' रमन सोच रहा था कि अब मैडम सफाई वाले अंकल को डाँटेंगी। बहुत मजा आयेगा, उनकी वजह से ही आज कक्षा में मेरी हँसी हुई।

पर मैम तो गुस्सा ही नहीं हुईं, वह मुस्कुरा कर बोली– ''पर कल तो महीप सर से तुमने कहा था कि तुमको सफाई नहीं पसन्द। तभी तो आज से तुम्हारे आस–पास सफाई बन्द कर दी गयी।'' रमन चुप हो गया। घर आकर उसने अपना बैग एक तरफ फेंक दिया। आज मम्मी ने कुछ नहीं कहा। उसे आश्चर्य हुआ, रोज तो मम्मी तुरन्त कहती थी– ''रमन बैग जगह पर रखो।''

वह आज जूते पहन कर कमरे में आ गया। मम्मी ने तब भी कुछ नहीं कहा। उसे आश्चर्य हुआ पर उसने सोचा, कुछ भी हो अब तो सर ने कहा है कि उसे सफाई नहीं रखनी है। रमन बहुत खुश हुआ, कितना आराम है? रोज फालतू में डाँट पड़ती थी। अगर मम्मी कहेंगी तो कह देगा कि आज से महीप सर ने कहा है कि मैं सफाई नहीं करूँगा। उसने अपने कपड़े बदले और मम्मी से कहा– ''मम्मी मेरी नेकर गन्दी हो गयी है। इसे धो दीजियेगा।''

''पर तुम्हारे स्कूल से कॉल आयी थी कि रमन को सफाई नहीं पसन्द है, इसलिए अब उसके कपड़े, कमरे किसी को भी साफ न किया जाये।''

अब रमन को समझ में आया कि उसके जूते पहन कर कमरे में आने पर मम्मी ने क्यों नहीं टोका? रमन को अपनी मैडम पर बहुत गुस्सा आया, मम्मी को बताने की क्या जरूरत थी? पर वह क्या कर सकता था? फिर भी रमन खुश था कि मम्मी उसको टोक–टोक कर परेशान नहीं करेंगी।

दो दिन बहुत आराम से बीते। तीसरे दिन स्कूल जाते समय वह अपनी गणित की कॉपी ढूँढ़ने लगा पर मिल ही नहीं रही थी। उसकी पूरी अलमारी बिखर गयी थी। उसकी सारी यूनीफॉर्म गन्दी हो गयी थी। मम्मी ने धोयी ही नहीं। उसके कमरे की सफाई भी मुन्नी आंटी नहीं करती थी। कल उससे दूध का गिलास गिर गया था, उससे बदबू आने लगी। उसने खिड़की खोली तो कमरे में जहाँ दूध गिरा था, मक्खियाँ आ गयीं और पूरे कमरे में भिनभिनाने लगी।

रमन को बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था। उसने मम्मी से कहा– ''मम्मी मैं आपके कमरे में रहूँगा।'' मम्मी ने मुस्कुरा कर कहा– ''क्यों अब तो तुम जैसे चाहते हो, रहते हो, मैं तुमको कुछ भी नहीं कहती, फिर क्या परेशानी है?'' रमन ने सिर नीचा करके कहा– ''मम्मी अब मुझे गन्दगी पसन्द नहीं है। मुझे सफाई का महत्त्व समझ में आ गया।''

तभी महीप सर और मैडम भी आ गये। रमन ने आश्चर्य से मम्मी को देखा। महीप सर ने कहा– ''हम तो देखने आये थे कि तुमको कैसा लग रहा है? साथ ही तुमको गन्दगी से हानि के बारे में बताने आये थे। पर मेरे समझाने से पहले ही तुमको समझ में आ गया।'' ''मुझे विश्वास है, अब रमन स्वयं भी साफ रहेगा और आस पास भी सफाई रखेगा।'' मैडम ने कहा। ''मैडम, मैं अपने दोस्तों को भी बताऊँगा कि सफाई कितनी जरूरी है।'' रमन ने कहा। मम्मी ने उसे प्यार से गले लगा लिया।

महीप सर ने कहा– ''शाबाश, हम ऐसे ही बच्चों को ढूँढ़ रहे हैं जो केवल सिखाने से नहीं स्वयं अपने अनुभव से सफाई का महत्त्व समझें। आज से रमन भी हमारे स्वच्छता अभियान में काम करेगा।'' यह सुनकर रमन खुश हो गया, आज पहली बार उसको इतने बड़े काम के लायक समझा गया था।

अलका प्रमोद
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

अकेले हम बूँद हैं,
मिल जाएँ तो सागर हैं।
अकेले हम धागा हैं,
मिल जाएँ तो चादर हैं।
अकेले हम पँखुड़ी हैं,
मिल जाएँ तो गुलाब हैं।
अकेले हम अलफाज हैं,
मिल जाएँ तो किताब हैं।
अकेले हम ईंट पत्थर हैं,
मिल जाएँ तो इमारत हैं।
अकेले हम दुआ हैं,
मिल जाएँ तो इबादत हैं।

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. 'बिट्टू बदल गया' कहानी से 5 मुहावरें लिखो।
2. पोलो खेल की एक टीम में कितने खिलाड़ी होते हैं?
3. स्वामी विवेकानन्द का जन्मदिन किस रूप में मनाया जाता है?
4. जयशंकर प्रसाद की एक प्रसिद्ध पुस्तक का नाम बताओ।
5. रमन को सफाई का महत्त्व कैसे समझ में आया ?
6. राजा की सोच में क्या बदलाव आया?
7. शुतुरमुर्ग पत्थर के टुकड़े क्यों खाता है?
8. अतुल ने बोतल के जिन्न से क्या माँग की ?
9. कौन सा भोजन करने पर याददाश्त कमजोर होती है ?
10. इस अंक की कौनसी कहानी आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) आई के. गुजराल (ब) एच.डी. देवेगौड़ा (स) चन्द्रशेखर (द) पी.वी नरसिम्हाराव (2) लाल बहादुर शास्त्री (3) पं. जवाहरलाल नेहरू (4) गुलजारीलाल नन्दा (5) अटलबिहारी वाजपेयी (6) सरदार वल्लभ भाई पटेल (7) राजीव गांधी (8) नरेन्द्र मोदी (9) मोरारजी देसाई (10) इन्दिरा गांधी

अन्तर ढूँढिए

(1) आकाश में पतंग का आकार बड़ा (2) लड़की के जूते का रंग अलग (3) फूल के पौधे का आकार बड़ा (4) आकाश में पतंग अतिरिक्त (5) आदमी की टाई गायब (6) लड़के के बाल का रंग अलग (7) एक पेड़ गायब (8) गमला अतिरिक्त

दिमागी कसरत

अवसर, अलवर, हरहर, बरगद, शरबत, दलपत, अजगर, दहशत, सरपट, झटपट, चढ़कर, थककर, परचम, गणपत, मनहर, उपवन, सरगम, अरहर, कटहल, बजकर

बूझो तो जानें

(1) टमाटर (2) कबूतर (3) गेंद (4) लोहार (5) कौआ

दिसम्बर 21 अंक में प्रकाशित बूझो तो जानें के उत्तर

(1) खिड़की (2) दरवाजा (3) कमरा (4) रसोई (5) अलमारी

वर्ग पहेली

1 स्व	तं	2 त्र		3 सु	4 म	धु	5 र
रा		स्त		6 भा	ई		क्षा
ज्य			7 को	ष		8 से	ब
		9 हि		10 चं	डी		न्ध
11 बं	कि	म	चं	द्र		12 का	न
गा		मा		बो		रा	
13 ल	14 गा	न		15 स	16 भा	गा	17 र
	18 य	व	न		19 त	र	ण

सुडोकू

9	4	5	2	7	1	8	3	6
8	1	6	3	9	5	4	2	7
7	3	2	6	8	4	5	1	9
2	5	8	4	6	7	3	9	1
6	9	4	1	3	8	7	5	2
3	7	1	5	2	9	6	4	8
4	6	7	9	5	2	1	8	3
1	2	3	8	4	6	9	7	5
5	8	9	7	1	3	2	6	4

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 7, ठाणे (महाराष्ट्र)

महक गुप्ता, कक्षा 9, बीकानेर

अदिति चौखड़ा, कक्षा-7, अहमदाबाद

सम्भावी सिन्हा, कक्षा 8, आगरा

नन्हे रक्षक

हम देश के नन्हे रक्षक,
दुश्मन से लड़ने जाएँगे।
फौजी बन हम एक दिन,
सीमा पर डट जाएँगे।।

हम प्राण हथेली पर लेकर,
युद्ध की अग्नि में जीते हैं।
अपनी मातृभूमि की रक्षा में,
हर पल विष घूँट भर पीते हैं ।।

शीश नवाकर निज झंडे को,
देश का मान बढ़ाएँगे।
आँख उठाकर जो देखेगा,
उस दुश्मन से अड़ जाएँगे ।।

गूँजेगा बस वन्दे मातरम,
जन गण मन हम गाएँगे।
नन्हे नन्हे कदम उठाकर,
ले बन्दूक सीमा पर जाएँगे ।।

देवांशी साबू, कक्षा 6, दिल्ली

अवनि कारवा, कक्षा-7, उदयपुर

आराध्या माहेश्वरी, कक्षा-4, हापुड़

आप भी अपनी
कलम और कूँची
का कमाल हमें
मोबाइल नं.
9351552651
पर या पत्रिका के
पते पर भेजें।

प्रेक्षा जैन, कक्षा 6, उदयपुर

भाग्यश्री, त्रिशला, ललिता, सुनिता – मारवाड़ जं.

राष्ट्रीय बालिका दिवस 24 जनवरी

: सामग्री सौजन्य :

आई.आई.एफ.एल. फाउंडेशन द्वारा गाँवों में संचालित सखियों की बाड़ी केन्द्र- देसूरी, मारवाड़ जं.

सुष्मिता, लक्ष्मी, रविना, अनिता – मारवाड़ जं.

रेशमा, बसंती, दरिया, सोमी, पुष्पा – देसूरी

वंदना, पूजा, निरमा, नीतू, निरमा – मारवाड़ जं.

पायल कंवर – देसूरी

पायल, धनी, विमला, सपना, कुसुम – मारवाड जं.

पार्वती, भूमिका, सुंदर, पल्लवी – मारवाड़ जं.

कंचन, सपना, सुमन, केसरी, पूजा, – देसूरी

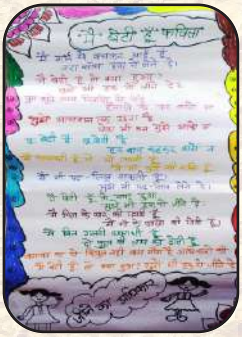

पुष्पा मेघवाल – मारवाड़ जं.

पूनम, माया, सोनल, मांगी – मारवाड़ जं.

सुमित्रा कंवर – देसूरी

मोनिका, रागिना, मनीषा, रिंकू, निशा – मारवाड़ जं.

चंदा, गीता, अरूणा, हर्षा, रेखा – देसूरी

ममता देवी – देसूरी

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

इलेक्ट्रिक विमान की रिकॉर्ड रफ्तार

दिग्गज ऑटो मोबाइल कम्पनी रोल्स रॉयल ने दुनिया का सबसे तेज उड़ने वाला इलेक्ट्रिक विमान बनाया है। विमान का नाम "स्प्रिट ऑफ इनोवेशन" रखा गया है। विमान का ताजा परीक्षण ब्रिटिश सेना की टैस्टिंग साइट पर किया गया। इस उड़ाने के दौरान विमान ने 623 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार हासिल की। रोल्स रॉयल के सीईओ वॉरेन इस्ट का कहना है कि यह विमानों को कार्बनमुक्त करने के सपने के पूरा करने की दिशा में बड़ी उपलब्धि है। विमान एक बार चार्ज करने पर 30 मिनट तक उड़ान भर सकता है।

सबसे बड़ा तिरंगा

नौ सेना दिवस पर नौ सेना की वेस्टर्न नेवल कमाण्ड ने मुम्बई में संसार के सबसे बड़े राष्ट्रीय ध्वज का प्रदर्शन किया। ध्वज की दिशा ऐतिहासिक गेट वे ऑफ इण्डिया की ओर है। खादी से बने इस तिरंगे ध्वज की लम्बाई 225 फीट और चौड़ाई 150 फीट है। ध्वज का वजन 1400 कि.ग्रा.है। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर इस ध्वज की परिकल्पना व निर्माण खादी और ग्रामोद्योग कमीशन ने किया।

बच्चों के दिल का नि:शुल्क अस्पताल

छत्तीसगढ़ के नया रायपुर स्थित श्री सत्य साई संजीवनी अस्पताल देश का एकमात्र ऐसा अस्पताल है जो बच्चों के हृदय रोगों के इलाज के लिए समर्पित है। फरवरी 2014 से चाइल्ड हार्ट केयर सेंटर के रूप में संचालित इस अस्पताल में दुनिया भर से आए बच्चों का इलाज किया जाता है। यह ऐसा अस्पताल है जहाँ कैश काउंटर नहीं है। प्राथमिक जाँच, ऑपरेशन, इलाज, रहना और खाना सभी मुफ्त है। यहाँ अब तक 4500 से अधिक बच्चों के हृदय का ऑपरेशन हो चुका है।

कबाड़ से तैयार की सोलर पावर ई-बाइक

बड़ोदरा के 18 वर्षीय नील शाह ने कबाड़ से ई-बाइक तैयार की है। इसमें लगे सोलर पैनल से यह चार्ज होती है और 8 घंटे की चार्जिंग में 15 किलोमीटर चलती है। 12 वीं कक्षा में पढ़ने वाले नील की सोलर पावर वाली ई-बाइक सूरज की एनर्जी और डायनेमो एल्टरनेटर से चलती है। नील के पिता ने कबाड़ की दुकान से 300 रुपये में साइकिल दिलाई। नील ने इसमें 10 वॉट के दो सोलर पैनल, 2 वॉल्ट की बैटरी और डायनेमो एल्टरनेटर लगाये। नील ने कहा कि इस प्रोजेक्ट में मुझे काफी सिखाया और आसपास की चीजों को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित किया।

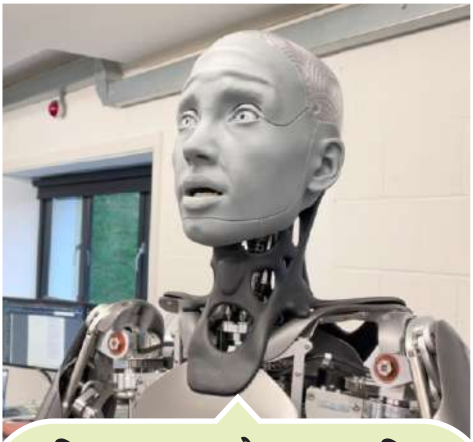

दुनिया का सबसे अत्याधुनिक ह्यूमेनॉयड रोबोट

यूके में दुनिया का सबसे एडवांस ह्यूमेनॉयड रोबोट पेश किया गया है। इसका नाम 'एमेका' रखा गया है। इसे ब्रिटिश कंपनी इंजीनियर्ड आर्ट्स ने तैयार किया है। कंपनी का दावा है कि यह ह्यूमेनॉयड रोबोट कई मायनों में इनसानों की तरह है। एमेका को इनसानों की तरह दिखने वाली आर्टिफिशियल बॉडी से तैयार किया गया है। इसे सुपर इंटेलिजेंट रोबोट के तौर पर भी जाना गया। इसकी सबसे बड़ी खूबी इसकी आँखें हैं, जो इसे दूसरे ह्यूमेनॉयड रोबोट से अलग बनाती है। इसकी आँखों में मूवमेंट देखा जा सकता है, यह पलकें झपकाता है. इसकी आँखें किसी भी इनसान का ध्यान आकर्षित कर सकती हैं।

याददाश्त को कम करते हैं पिजा, चिप्स व पास्ता

अत्यधिक प्रोसेस्ड फूड के सेवन से याददाश्त कमजोर होती है। इससे न्यूरो सम्बन्धी समस्याओं के तेजी से बढ़ने की आशंका रहती है। अल्जाइमर, एजिंग बढ़ने व शरीर में सूजन जैसी समस्याएँ हो सकती है। यह शोध पत्र ब्रेन, बिहेवियर एण्ड इम्युनिटी जर्नल में प्रकाशित हुआ। स्टडी के अनुसार इस तरह के उत्पादों के अत्यधिक प्रयोग से याददाश्त की कमी के अलावा टाइप-2 डायबिटिज, मोटापा, शरीर में सूजन जैसी समस्याएँ देखने को मिली है।

Nai kalam

My Nani

My nani's name is Dr. Vimla Bhandari. She lives in a town Salumber, near Udaipur in Rajasthan. She is 66 years old. My nani is the most amazing person I have ever met. She looks adorable in her white hair with a dazzling and beautiful smile on her face. She always tries to keep us content and motivated.

She is really kind and helping. We can talk to her about anything. I think she is best fitted to the slogan 'Jahan chah hai vahan raah hai' by becoming a successful writer rising from a small town. She writes amazing stories for children and her stories are very interesting.

I love her very much and I am always eager to go her home. She is very skilled, good in writing, drawing, embroidery etc. I have learnt many skills from her. She had a great contribution in making me and my life a much better version of mine. My nani is a great cook and all her dishes are so pleasing, attractive and delicious. I like the most is vegetable arbi and sweet gulab-jamun . She often tells me a story when I am with her. The way she narrates story, it makes me feel like I am a character in the story.

When I am at my nani's home we go to temple every morning. I enjoy playing interesting games with her together with my cousins and elders. My nani uses technology to the fullest in her field even at this age. She is keen to learn new things and explore them. This slogan too suits her, 'There is no age to learn' . She had held many programmes and in one of them I participated too. I felt so glad to participate in my nani's programme. Everyone loves her and respect her so much. By my side or miles apart, My nani is always close to My heart, I love you nani.

Aditi Chaukhara
Class 7th
Ahmedabad (Gujrat)

When I was in grade 7, I used to ask a lot of question ....!

One day, I asked my English Teacher, "Why do we ignore some letters in pronunciation eg. the letter H....... in Hour, Honour .....etc. ...??

My English Teacher said, "We are not ignoring them; they're considered silent "....

(I was even more confused .....??)

During the lunch break, my Teacher gave me her packed lunch and asked me to heat it in the Cafeteria.

I ate all the food and returned her the empty container. ...!

My English Teacher said : What happened? I told you to go and HEAT my food, you are returning me this empty container.

I replied, "Madam, I thought 'H' was silent.

Sam's Help
Sam's father was very strict. One day-
Sam, get some vegetables from the market.
Alright, father
Thus...
What! The poor child appears to be blind.I must help her.
Holding her hand, Sam helped her to cross the road.
Can you please take me to the hospital?
Why not? Please come.
HOSPITAL
Sam took the girl to the hospital.

Lots of thanks.Now you can go.
Alright.
Hey, isn't that the son of our Gilbert?
PHARMACY
Yes, but who is that girl?
When Sam reached home..
Hmm,how long have you been gone?You don't know the value of time.
The father punished Sam.
Father, I went to help a child.That is why I was late.
Hmm,lying!
Stand in the courtyard till evening.You won't get your lunch also.
What!
The trip to the city just takes half an hour.You came back after one and a half hours.

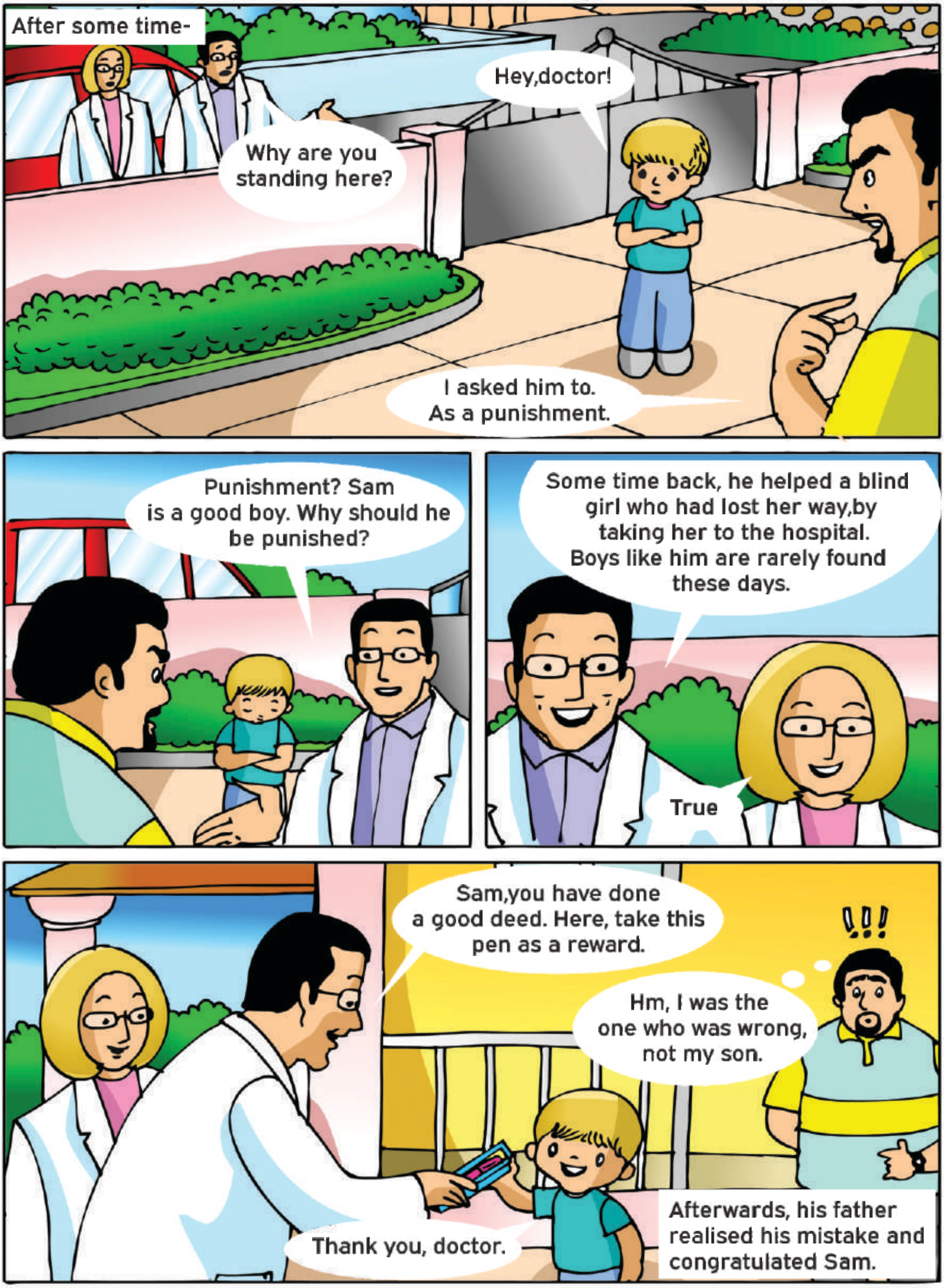
After some time-
Hey,doctor!
Why are you standing here?
I asked him to. As a punishment.
Punishment? Sam is a good boy. Why should he be punished?
Some time back, he helped a blind girl who had lost her way,by taking her to the hospital. Boys like him are rarely found these days.
True
Sam,you have done a good deed. Here, take this pen as a reward.
Hm, I was the one who was wrong, not my son.
Thank you, doctor.
Afterwards, his father realised his mistake and congratulated Sam.

किड्स कॉर्नर

More About the Number 6

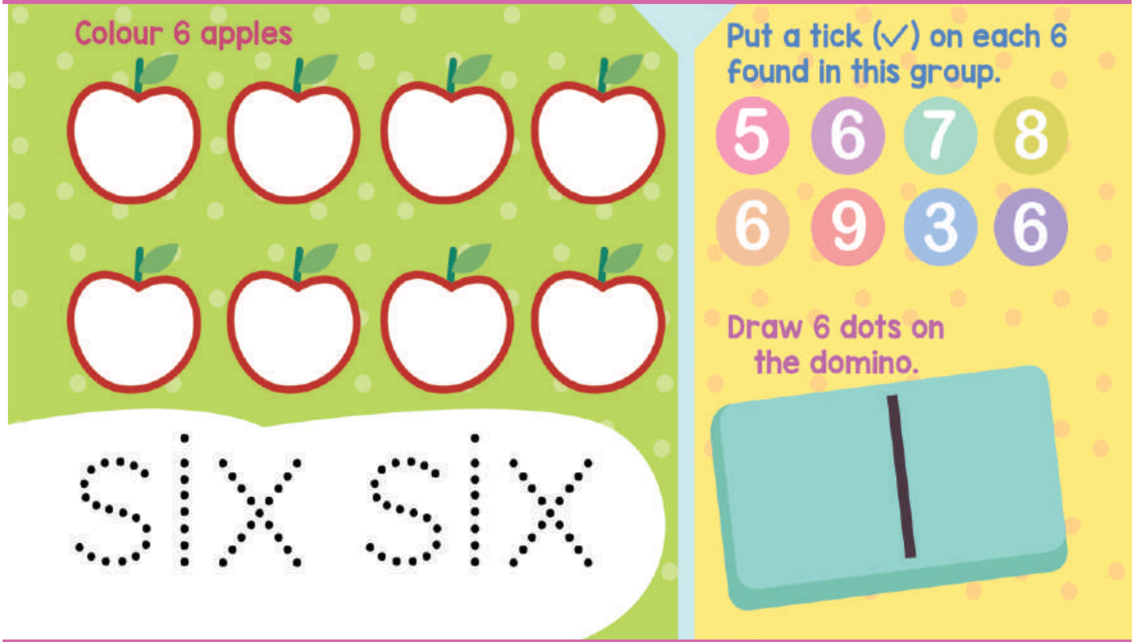

जन्मदिन की बधाई

3 जनवरी

धनिष्ठा बोहरा
उदयपुर

11 जनवरी

निखिता सिंह
मथुरा

15 जनवरी

लिली यादव
रावतभाटा

20 जनवरी

अक्षत बिष्ट
खटीमा, उधमपुर

20 जनवरी

नव्या देराश्री
राजसमन्द

29 जनवरी

छवि राठी
निम्बाहेड़ा

29 जनवरी

कियारा बोथरा
कोलकाता

30 जनवरी

महक प्रज्ञा बोथरा
नई दिल्ली

आपका स्कूल शैक्षिक भ्रमण पर जाने की योजना बना रहा है?
इसे मूल्यपरक, उपलब्धिपरक और यादगार बनाने के लिए प्रस्तुत है...
'बालोदय एजुटूर'
BALODAYA EDUTOUR
सर्वांगीण बाल विकास के प्रति कृतसंकल्पित विद्यालयों को
राजस्थान के मेवाड़ अंचल के शैक्षिक भ्रमण का उत्कृष्ट अवसर
प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण का मौका
कुंभलगढ़
राजसमंद
नाथद्वारा
चित्तौड़गढ़
हल्दीघाटी
उदयपुर
बालोदय एजुटूर की विशेषताएं
राजसमन्द झील के निकट एक पहाड़ी पर प्राकृतिक दृश्यावलियों के बीच 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में बेस कैम्प
योगा सत्र, चित्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी, फिल्म शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
पीस पैलेस में सादगीपूर्ण आवास व सुरुचिपूर्ण भोजन की श्रेष्ठ व्यवस्था
बस सुविधा उपलब्ध
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
अभिषेक कोठारी, संयोजक +917727867624
राजसमंद कार्यालय-
+91 91166 34513 head.office@anuvibha.org
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
https://anuvibha.org
अणुविभा

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

जयशंकर प्रसाद

जन्म : 30 जनवरी, 1889 ■ निधन : 15 नवम्बर, 1937

जयशंकर प्रसाद का जन्म उत्तरप्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ। वे हिन्दी भाषा के कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबन्ध-लेखक थे। हिन्दी के छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भ के रूप में प्रतिष्ठित हुए। कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने कई यादगार कृतियाँ दीं। आपका 'कामायनी' खंडकाव्य अत्यधिक प्रसिद्ध है। आपके उपन्यास 'कंकाल' व 'तितली' भी लोकप्रिय हुए। उन्होंने अपनी विविध रचनाओं के माध्यम से मानवीय करुणा और भारतीय मनीषा के अनेकानेक गौरवपूर्ण पक्षों का उद्घाटन कलात्मक रूप में किया है।